मासिक
jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

अक्टूबर 2016 वर्ष : 11 अंक : 6

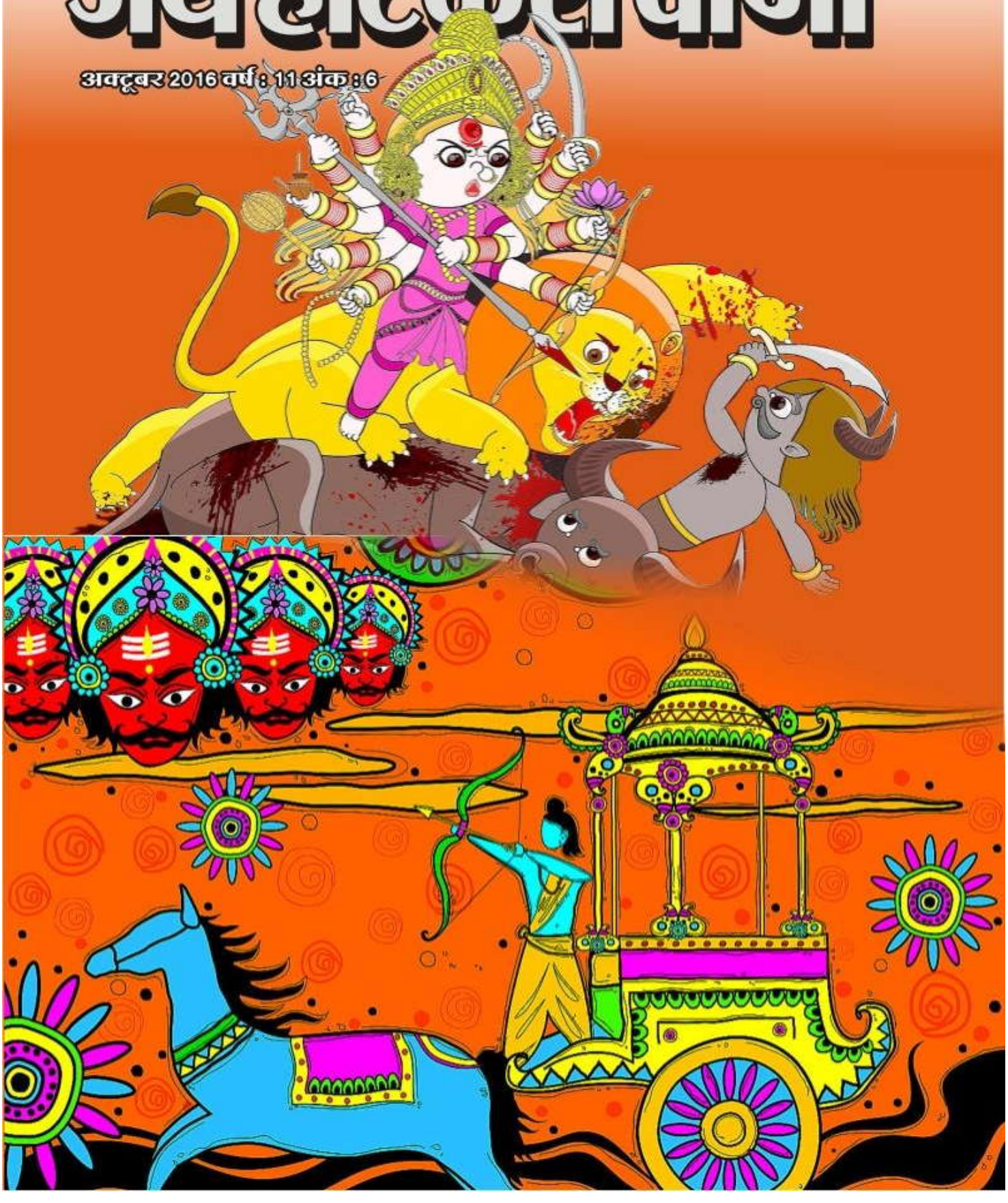

प्रथम वर्षगांठ

दिशा नागर

जन्मतिथि 7 अक्टूबर 2015
सुपुत्री– आशीष-सौ.पूजा नागर

:: शुभाकांक्षी ::

परदादा–परदादी : श्री शंकरलाल-सौ. बसंतीबाई नागर
दादा–दादी : श्री प्रकाश-वंदना नागर
दादु फुफाजी–बुआ दादी : श्री कृष्णकांत–सौ. संध्या शर्मा (देवास)
चाचु : अभिषेक नागर, बड़ी माँ : नेहा शर्मा (देवास)
भैय्या : चि. राघव शर्मा (देवास), चि. जाग्रत नागर (इन्दौर)

नाना–नानी :
डॉ.सूरज–सौ.अलका नागर (भोपाल)
मामा– आशीष नागर
मौसी– आरती नागर,
वर्षा नागर (इन्दौर)

समस्त परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ
नागर परिवार, ग्राम बाड़ोली, देवास

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

कु. प्रतिभा शर्मा
(चिंकू)

1 अक्टूबर (दुर्गा अष्टमी)

(सुपुत्री- सौ.सुनिता-महेन्द्र शर्मा)

शुभाकांक्षी- शर्मा परिवार माकड़ोन मो. 9424815705

प्रथम जन्मदिवस पर बहुत-बहुत बधाई

कार्ष्णि नागर

(सुपुत्री- सौ.नेहा-अम्बरीश नागर)

दिनांक 12-10-2016

शुभाकांक्षी-
श्रीमती ताराबाई (परदादी)
सौ. रेखा-ओमप्रकाश नागर (दादा-दादी)
सौ.पुष्पा-दिनेश मेहता (नाना-नानी)
संदीप मेहता (मामा)

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा
सौ.आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

झरोखा

अंबाजी पद यात्रा का इतिहास 10

मध्यप्रदेश नागर परिषद शाखा उज्जैन की बैठक 13

खजराना मंदिर में भजनों की शानदार प्रस्तुति 16

नगर पालिका परिषद द्वारा श्रीमती नागर का सम्मान 18

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो. 9826095995, 9926285002

अंक 10/वर्ष

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

कम शब्द, असरदार बात

महंगाई बढ़ने एवं आय घटने के कारण जय हाटकेश वाणी की पृष्ठ संख्या सीमित की गई है। आप सभी लेखकों, रचनाकारों से निवेदन है कि अब अधिक लंबे लेख नहीं भेजें, संक्षिप्त में अपनी बात कहें। पिछले कुछ समय से देखा जा रहा है कि लेखकों की संख्या सीमित हो गई है, हालांकि जो लेखक जय हाटकेश वाणी में अपनी नियमित रचनाएँ दे रहे हैं, वे बहुत ही ज्ञानवर्द्धक एवं पठनीय है, परन्तु 'वाणी' का मकसद नवलेखकों को प्रोत्साहित करने का है, अतः नियमित लेखकों के साथ नए लेखक भी अपनी रचनाएं भेजें। कुछ समाजजनों ने इस बारे में मुझसे मोबाइल पर चर्चा की है, परन्तु रचनाएं तैयार करना, उन्हें प्रेस तक पहुँचाना यह सब कठिन कार्य है, हर कोई इसके लिए समय नहीं निकाल पाते। वर्तमान में नियमित लेखकों के विषय बेशक नवीन होते हैं, परन्तु लेखक की जगह एक ही एक नाम देखकर पाठकों को जरूर अजीब लगता होगा।

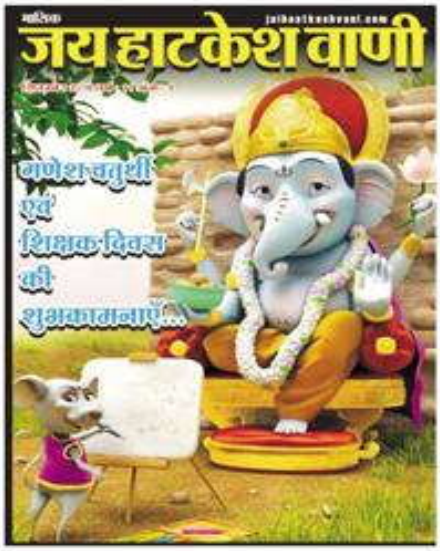

मेरा नियमित लेखकों से भी निवेदन है कि वे बहुत लंबे एवं क्रमशः चलाने की मजबूरी वाले लेख नहीं भेजें, वे संक्षिप्त में अपनी बात कहें एवं असरदार तरीके से कहें तथा एक या दो अंक के अंतराल में अपने लेख भेजें। लेखों में परिवार, समाज एवं अध्यात्म विषय पर विशेष ध्यान दिया जाए। सबसे पहले हम सुखी परिवार की कल्पना करें, फिर संगठित समाज की तथा उसके साथ अध्यात्म से भी जुड़े रहे यह परिकल्पना होनी चाहिए। याद रहे आपके विचार ही भविष्य में कार्य रूप में परिणीत होते हैं तथा वे सुनहरे संसार का निर्माण करते हैं।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

आत्मदीप से रोशन करें दीपावली

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार हमारी जीवन यात्रा भी दो तरफ चलती है, एक बाह्य समृद्धि दूसरी आंतरिक समृद्धि, दीपावली बाह्य समृद्धि का पर्व तो है, परन्तु साथ ही आंतरिक समृद्धि का भी अपना महत्व है, क्योंकि यह समृद्धि आपकी मोक्ष की राह प्रशस्त करती है। हम अपना एवं परिवार का जीवन समृद्ध बनाने हेतु सारा जीवन झोंक देते हैं, इस समृद्धि की प्रशंसा दुनियावी लोग करते हैं, परन्तु आत्मदीप की रोशनी परमपिता तक पहुँचती है।

क्या है यह आत्मरोशनी दरअसल हमारे जो गुण हैं सत्य, दया, दान, परोपकार, और धर्म ये हमारी आंतरिक उपलब्धि है इन गुणों की वृद्धि के लिए हम बाह्य समृद्धि के साथ-साथ भी प्रयास कर सकते हैं। बल्कि श्रीमद् भगवतगीता में भगवान श्री कृष्ण यही अनुशंसा करते हैं, कर्म और धर्म साथ-साथ चले, कर्म आपको बाहरी तौर पर समृद्ध बनाएगा तथा धर्म आंतरिक तौर पर, निष्काम कर्म आपको कर्मयोगी बनाएगा। यह साथ-साथ चलने वाली प्रक्रिया है, बल्कि आंतरिक समृद्धि की वजह से आप संसार की बाधाओं को आसानी से पार कर सकते हैं, हम भले ही व्यवसाय करते हों, नौकरी करते हों, जो भी हमारी स्थिति हो, उसमें धर्म को अवश्य साथ लेकर चलना चाहिए, क्या है धर्म? सत्य ही धर्म है, सेवा, दान, परोपकार ये सब धर्म के रूप है, हम धर्म के सभी या कुछ प्रकार चुनकर उसमें संलग्न रहेंगे तो अंतर का दीप प्रकाशित होगा, यह अंतरदीप निश्चित रूप से आपके जीवन को तो रोशन करेगा ही, इसकी रोशनी आपका यश दूर तक फैलाएगी तथा बाह्य जीवन को भी वह सार्थक एवं सफल बनाएगी। परमपिता कभी भी आपकी बाह्य समृद्धि पर मोहित नहीं होते वे आंतरिक उपलब्धि का आंकलन करते हैं।

गरीब-अमीर, जात-पात का पैमाना उनके पास नहीं है वे तो धर्म के प्रति आपकी भावना का आंकलन करते हैं। अतः जीवनभर अपने एवं परिवार के लिए हम कितने ही साधन जुटाते रहे, परन्तु आपने कल्याण हेतु शास्त्र-विहित धर्म भी करते रहें, सद्गुणों एवं सद्कार्यों की रोशनी में स्वयं प्रकाशित हो तथा समाज एवं देश को भी गौरवान्वित करें, यह संकल्प ही आपकी दीपावली को सही मायने में सार्थक करेगा।

यह तय है कि हम सांसारिक समृद्धि के लिए जीवन भर प्रयासरत रहते हैं, जो स्वयं को एवं परिवार के सुख के लिए आवश्यक भी है, लेकिन इस सुख में स्थायित्व नहीं है, यह तो नश्वर है, नाशवान है, वैसे तो भौतिक सुख आंशिक रहता है, लेकिन आंतरिक गुणों के कारण इन सुखों को भी पूर्णता प्राप्त होती है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा को उसकी मित्रता एवं भक्ति के कारण स्वयं ऐश्वर्य प्रदान किया था। भगवान जो ऐश्वर्य प्रदान करते हैं वह स्थायी सुख का कारक होता है। अतः अपने द्वारा जुटाए साधन-संसाधन ईश्वर को अर्पित कर उनकी इच्छानुसार उसका भोग करना शास्त्रोनुचित है। मनुष्य इन भौतिक साधनों को अपना मानकर कष्ट भोगता है तथा उसके पाने एवं खोने में उसे सुख एवं दुःख की अनुभूति होती है। वास्तव में संसार चक्र प्रभू की इच्छा से ही चल रहा है तथा यहाँ हमारा कुछ नहीं है, सब उन्हीं का है ये सांसें भी उनकी दी हुई है। जब हमारे अंतर में ऐसा समर्पण भाव आता है तब हम सांसारिक भोग का वास्तविक आनन्द ले पाते हैं। जो लोग यह बात समझ जाते हैं उन्हें आप अंतरप्रकाशित समझिये तथा वास्तव में यह दीपावली उन्हीं की है वे बाहर-भीतर दोनों तरफ रोशनी से ओत-प्रोत है, कहीं अंधेरा नहीं है और दीपावली इस रोशनी का ही पर्व है।

-संगीता दीपक शर्मा

पुरातन समय में उत्सव मनाने का रिवाज था। भारत में हमारे बड़े -बूढ़ों ने सभी उत्सवों को रीति-रिवाज से ऐसे जोड़ा था कि वे हमारी जीवनशैली में उतर गए। उत्सवों की जो सबसे बड़ी देन हमारे लिए है वह यह है कि उनसे हमें उत्साह प्राप्त होता है। उत्सव और उत्साह एक -दूसरे के पर्याय हैं। फिर हिंदू माह की परंपरा में तो हर महीने कुछ ऐसे उत्सव हैं कि हम पूरे साल उत्साहित और खूब खुश रह सकते हैं। सावन माह आनंद का माह है। चारों तरफ हरियाली बिखर जाती है।

उत्सव-उत्साह का संदेश लेकर आते हैं

प्रकृति प्रेमियों के लिए तो यह महीना वरदान है। बारिश का अंतिम महीना भादौ है। श्रीकृष्ण और गणेशजी का जन्मोत्सव हमारे जीवन में खूब उत्साह भर देता है। इसी माह हम अपने पितृों को भी याद करते हैं। पितृों से जुड़ना यानी जीवन से जुड़ना है। इसके बाद के महीनों में नवरात्रि, दीपावली जैसे उत्सवों की बहार आ जाती है। उत्सव का मतलब केवल यह नहीं है कि आयोजन कर लिया, उत्सव हम लोगों को एक -दूसरे से जोड़ते भी हैं। पहले के समय में किसी के घर दुख आ जाता तो गांव और समाज के सब लोग उस परिवार या व्यक्ति के दुख में शामिल हो जाते थे।

एक भाईचारा, प्रेम और आपसी विश्वास से सराबोर संबंध होते थे। समाज की अपनी मर्यादा और विश्वसनीयता थी। जब भी आप उत्सव मनाएं एक बात का विचार जरूर करिए क्या हम आज उस समय को नहीं जी सकते? आज लोगों के पास वक्त कम है। आज हर इंसान अपनों से दूर है और अपने सुख-साधनों से ही लिपटा हुआ है। उस मकड़जाल को तोड़कर समाज से जुड़े तो वह जिंदगी केहर दिन उत्सव की तरह जी सकता है। यह सच है कि जीवन का प्रवाह रुकता नहीं है। समय कभी ठहरता नहीं और बीता हुआ क्षण वापस नहीं आता, लेकिन यह भी है कि व्यक्ति अगर चाहे तो समय को भी अपनी मुट्ठी में कैद कर सकता है, मीठी स्मृतियों के साथ। एक काम अवश्य करिए, समाज की गतिविधियों से अवश्य जुड़े रहिए। जिसे समय को मुट्ठी में रखकर कार्य करना आ गया उससे उसका परिवार, समाज खुद-ब-खुद जुड़ जाता है। अब बताइए इससे बड़ा उत्सव क्या हो सकता है।

उत्सव मनाते समय दो बातों को जीवन में जरूर उतारें -धैर्य और संयम। यदि हम थोड़े से धैर्य और संयम से अपनी रोजमर्रा की परेशानियों को समझें तो ये परेशानियां हमारे लिए बहुत छोटी हो जाएंगी। हम इनमें उलझेंगे नहीं। आज हम लोग छोटी-छोटी परेशानियों में उलझकर खुद भी दुखी होते हैं और अपने से जुड़े लोगों को भी परेशान करते हैं। हमें उत्सव के उत्साह से भरपूर होकर हर आने वाले दिन का स्वागत करना चाहिए। चाहे हम किसी भी उम्र के हों, हमारे भीतर का उत्साह कभी नहीं मरना चाहिए। हमारे भीतर उत्साह है तो आने वाला प्रत्येक दिवस उत्सव की तरह लगेगा। तो चलें हम आने वाले उत्सवों की तैयारी अब सबके साथ व पूरे उत्साह, उल्लास के वातावरण में करें।

श्रीमती आभा मेहता (अध्यक्ष-
मध्यप्रदेश नागर महिला परिषद)
मोबा. 094253-80404

जय हाटकेश वाणी के प्रति एक शब्द विचार

नागर बन्धुओं जिस प्रकार माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने लेनदार, किसान को अपने लहलहाते खेत को देखकर जो आनन्द प्राप्त होता है वही आनन्द ज्ञान राशि के संचित कोष के रूप में प्रकाशित 'मासिक जय हाटकेश वाणी' पत्रिका को पढ़ने से होता है या होता रहेगा। इस पत्रिका का प्रकाशन भारत ही नहीं वरन् विश्व में जहाँ-जहाँ भी नागर ब्राह्मण समाज के बन्धु निवास करते हैं वहाँ-वहाँ संस्कार व संस्कृति को परिलक्षित करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को जागृत करते हुए यह पत्रिका यथा नाम तथा गुण को भी दर्शाती है। जैसे-

मा सिक जय हाटकेश वाणी जय हाटकेश वाणी
सि लसिले वार स्तम्भों का प्रकाशन है हाटकेश वाणी
क लेवरदार मुखपृष्ठों व अन्य पृष्ठों का सुन्दर उपहार है हाटकेश वाणी
ज नोन्मुखी एवं रचनात्मक समाज का समाधान है हाटकेश वाणी
य दा यदा ही धर्मस्य ग्लानीर्भवति भारतः का संदेश है हाटकेश वाणी
हा टकेश्वर ईष्ट के पूजकों का इतिहास है हाटकेश वाणी
ट हल टहल बजाकर चलह-पहल के समाचारों का खजाना है हाटकेश वाणी
के वल भारत ही नहीं समूचे विश्व के नागरों का विश्वास है हाटकेश वाणी
श दाशयता के साथ जीवन मरण हानि, लाभ, यश, अपयश का ज्ञान है हाटकेश वाणी
वा स्तव में साधना आराधना व उपासना का स्तुतिगान है हाटकेश वाणी
णी ष्णात भाव से प्रजातंत्र के चौथे स्तम्भ की पूर्ण श्रृंखला है हाटकेश वाणी

जय हाटकेश वाणी! जय हाटकेश वाणी! मासिक जय हाटकेश वाणी

इस प्रकार सामाजिक उन्नयन के लिये उक्त पत्रिका का सम्पादकीय परिवार, प्रकाशकीय परिवार, विचारक, समाज उद्धारक, लेखक एवं पदाधिकारी आदि सभी साधुवाद के पात्र है। महानुभाव यह मेरा आलेख अतिश्योक्ति पूर्ण एवं केवल स्तुतिगान नहीं है मेरे अनुभव से विगत 11-12 वर्षों से मासिक पत्रिका का प्रकाशन परिवार समाज के प्रति समर्पित रहकर कई कठिनाईयों का सामना करते हुए अपने उत्तरदायित्वों का पूर्ण निर्वहन कर रहा है जो एक मिसाल है। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिये जो सम्पादक मण्डल ने मार्गदर्शी सिद्धान्त बनाये हैं उस आधार पर समाज के सक्षम लोगों को विज्ञापन आदि के लिये सशुल्क आगे आना चाहिये, जिससे इस पत्रिका का कलेवर और ज्यादा निखरे क्षमा के साथ जय हाटकेश।

आलेखन- गोपालकृष्ण आत्मज श्यामलाल दीक्षित
पूर्व सरपंच एवं समाजसेवी मो. 9755464609

सक्रिय गतिविधियों की खबरें जगाएगी निष्क्रिय संगठनों को

अगस्त माह की 'जय हाटकेशवाणी' पत्रिका के लेख काफी रोचक रहे। हमेशा की तरह सम्पादक वाणी और विचार वाणी के अंतर्गत कुछ आवश्यक मुद्दे उठाए गए। कुछ नये लेखकों के लेख पढ़कर अच्छा लगा। मुम्बई में नागर सांस्कृतिक संस्था के तहत साल में दो कार्यक्रम हाटकेश्वर उत्सव और नवरात्री का आयोजन होता है। यहाँ पर लोग आर्थिक सहायता भी करते हैं, उत्साह भी रहता है एक-दूसरे से मिलने का और सहयोग करने का जज्बा भी देखा जाता है।

बांसवाड़ा में हमारे नागर जाति के आयोजन भी बड़े उत्साह से और धूमधाम से होते हैं। उनके अनुभव से दूसरे संगठन भी सिख सकते हैं। विचार वाणी के तहत 'माता-पिता' की देखभाल के रूप में जो मुद्दे उठाए गए हैं उनके बारे में मुझे यही कहना है कि हमारे नागर समाज में माता-पिता, सास-ससुर को बहुत प्यार, सम्मान और आदर से रखा जाता है। कुछ गिने-चुने किस्से छोड़कर हमारे नागर बंधु वृद्धावस्था में माता-पिता, सास-ससुर की देखभाल बहुत अच्छी तरह से कर रहे हैं और इस बात पर मुझे नागर होने का गर्व है। पाठकों से निवेदन है कि वे लोग ऐसे किस्से पत्रिका के जरिए लोगों तक पहुँचाए जहां पर बहू, बेटे, बेटी, दामाद अपने माता-पिता को आदर और सम्मान से रखते हैं।

-उषा ठाकोर, मुम्बई

नवरात्रि का महापर्व हमें जगजननी माँ अंबा भवानी, आद्य शक्ति, ममतामयी, सर्वव्यापी माँ की आराधना करने में आनन्द मग्न एवं अच्छा जीवन जीने, सदाचारी बनने की प्रेरणा देता है। पूरा परिवार प्रेममग्न होकर एक दूसरे के प्रति एवं समाजसेवा हेतु प्रेरणा, निष्ठा एवं सद्भावना से ओतप्रोत हो जाता है। नवरात्रि के दौरान न केवल पूजा, पाठ, दर्शन, भजन भक्ति, गरबे आदि का आनन्द लेते हैं, बल्कि हमारे आचरण एवं व्यवहार में बदलाव आना भी इसका उजला पक्ष है।

माता-पिता की सेवा से ही प्रसन्न होती है नवदुर्गा

'माँ' अपने विराट निराकार, अकल्पनीय, अद्भूत रूप में पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त होकर निरन्तर सृष्टि के पालन पोषण में लगी हुई है, वह सूर्य के रूप में प्रकाश देकर क्रियाशील बनाती है तथा वही रात्रि के अंधकार में विश्राम प्रदान करती है। पेड़-पौधों के रूप में फल-फूल, अनाज से पोषण देती है तथा नदी, नाला, तालाब कुओं के द्वारा जल प्रदान करती है एवं वायु से प्राण वायु प्रदान करती है।

सचमुच इसके कार्य एवं उपकार गिनाए नहीं जा सकते। ये सब गतिविधियाँ न केवल मनुष्य बल्कि हर प्राणी के लिए है। चल एवं अचल सब में वह व्याप्त है एवं समान रूप से बगैर भेदभाव, बगैर किसी अपेक्षा के निःस्वार्थ भाव से प्रेम एवं मातृत्व के लिए यह सब कर रही है।

इतनी भूमिका एवं भावनात्मक पाठकों को बनाकर लेखक आपको यह कहना चाहता है कि ऐसी माँ को कहीं ढूंढने जाने की जरूरत नहीं है। जगतजननी माँ ने ही अपने एक रूप में अपने घर में माँ के रूप में अवतार लिया है।

मूलमंत्र-

'कुपुत्रों जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति'

यह मंत्र संक्षेप में पूरा सार है। गर्भधारण से लेकर जन्म से जब हम निरिह शिशु होते हैं। स्वयं कुछ कर नहीं सकते तब से हमारा पालन-पोषण एवं देखभाल करती है। प्रतिदिन भोजन-पानी की व्यवस्था, स्वास्थ्य की देखभाल अनगिनित सेवा कार्य निःस्वार्थ करती है। बड़े एवं सक्षम होकर हम उसकी देखभाल करें, वृद्धावस्था एवं बीमारी के दौरान ख्याल रखें तो उसमें कौन-सी बड़ी बात है।

माँ के ऋण से कोई उऋण नहीं हो सकता। पुत्र हों या पुत्री वे अपनी माँ की निःस्वार्थ भाव से सेवा करें, एवं हमारे समाजजन इस नवरात्र में मातृसेवा का संकल्प लें। माता-पिता एक ही हैं, अतएव पितृसेवा हेतु पृथक से निवेदन करने की आवश्यकता नहीं है।

याद रहे कि हम जब पिता की सेवा करते हैं तब भी माँ प्रसन्न होती है। जिनके माता-पिता दिवंगत हो चुके हैं वे उनकी स्मृति में सद्कार्य करें। क्योंकि माता-पिता का आशीर्वाद हमें उनके स्वर्गस्थ होने के बाद भी मिलता रहता है। उनकी आत्माएं जहाँ भी रहती है, अपने पुत्र-पुत्रियों को आशीर्वाद एवं मंगल प्रदान करती है।

-नटवरलाल झा
नागरवाड़ा,
बांसवाड़ा

ब्राह्मणों में सर्वश्रेष्ठ नागर ब्राह्मण -मोरारी बापू क्योटो जापान से

मोरारी बापू , तुलसीकृत राम चरित मानस के मूर्धन्य विद्वान् का क्योटो जापान से मानस पर नव दिवसीय प्रवचन आस्था चैनल पर चल रहा था। भाव विभोर होकर वे नागर कुल दीपक कृष्ण भक्त नरसिंह मेहता का सुस्मरण करते हैं । नरसिंह मेहता के सर्वकालिक अद्भुत भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे' का स्मरण वे महात्मा गांधी के सन्दर्भ के साथ करते हैं । 23 अगस्त की 2016की रामकथा में वे भूत भावन भोले नाथ बाबा शिवशंकर का वर्णन कर रहे थे। उन्होंने इसी कड़ी में नागर ब्राह्मण सन्दर्भ सहित शिवजी का वर्णन भूतभावन हाटकेश्वर भगवान एवं ब्राह्मणों में सर्वोत्कृष्ट ब्राह्मण नागर ब्राह्मण पर लगभग 10 मिनट तक पूर्ण श्रद्धा समर्पण से भाव के साथ अमृतमयी अभिव्यक्ति दी , सुनकर मन प्रसन्नता से अभिभूत हो गया। इस अभिव्यक्ति को अंतरराष्ट्रीय रूप से पूरे विश्व के श्रोताओं ने सुना। इस सुन्दर अभिव्यक्ति हेतु मोरारी बापू को वसुंधरा के सम्पूर्ण नागर समाज की ओर से मैं कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ , यह कृतज्ञता अभिव्यक्त करना उनकी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति की तुलना में वास्तव में बहुत कम है। मानव जीवन ईश्वर के अनन्त आशीर्वादों एवं पूर्व जन्म के सुकृत कर्मों के सुफल से मिलता है। प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट कृति मानव और मानवों में श्रेष्ठ ब्राह्मण और ब्राह्मणों में भी श्रेष्ठ उच्च कुलीन नागर ब्राह्मण परिवार में जन्म एक अद्वितीय ईश्वरीय आशीर्वाद-प्रसाद है, जिस पर हम नागर ब्राह्मणों को असीम गर्व है।

जय हाटकेश वाणी के अगस्त माह के अंक में अहसान मानें... धन्यवाद दें... शीर्षक से विचार मंथन के लिए दिए मानव जीवन पर विचार प्रतिपादन का उत्तम विषय सम्पादक महो. ने दिया है, वे बधाई के पात्र हैं। विषय के लिए ईश्वरीय स्मरण - कलयुग केवल नाम

अधारा ,सुमिर सुमिर उतरहिं भव पारा / योग प्राणायाम का मानव जीवन में सात्विक तड़का सम्पादक जी ने लगाकर विषय को उत्कृष्टतम क्षितिज तक पहुँचा कर विचार मंथन अमृत की वृष्टि चाही है। माखन का मंथन घृतामृत देता है। विचार मंथन देता है विचारामृत। विचारामृत देता है मानव जीवन को अमृत। अस्तु

मानव जीवन अमूल्य है। हम असीम सहज सरल जीवन जियें। हमारे इष्ट देव भूत भावन हाटकेश्वर भगवान् अत्यंत सहज हैं। शिव सहज, शिव की गंग-धार सहज। शिव का अर्थ ही होता है कल्याणकारी। शिव सहजता से प्रसन्न होने वाले कल्याणकारी देव हैं। सहजता में सर्व सुकृत है, असहजता में ही विकृतियाँ हैं।

हम ब्राह्मण हैं,प्रात: स्नानोपरांत मात्र 5-से 10 मिनट का समय निकालकर मात्र गायत्री मन्त्र, गणेश स्तोत्र, गणेश अथर्व शीर्ष, आदित्य ह्रदय स्तोत्र, हनुमान चालीसा, सूर्य को अर्घ्य देंने मे से मात्र कोई 1-2 क्रियाओं को भी कर लेवें। तो यह क्रिया मन को अद्भुत शांति तथा दैनन्दिनी कार्यों को निष्पादित करने की असीम उर्जा प्रदान करेगी।

आजकल आप सिया के राम को अवश्य देख रहे होंगे। जन्माष्टमी व अगले दिवस के इपिसोड में राम रावण का घमासान युद्ध दर्शाया गया है। राम कई बार रावण को मार देते हैं और रावण पुन: जीवित हो राम से युद्ध करने लगता है। सिया के राम सीरियल में मुनि वसिष्ठ के प्रसंग को नहीं दर्शाया गया है। सीरियल की अपनी सीमा भी हैं। बाल्मीकि रामायण में दर्शाया गया है कि राम रावण से युद्ध करते हुए थक गए थे व् चिंतित मुद्रा में थे। इतने में युद्ध के लिए रावण राम के सम्मुख पुन: आ गया। यह अवलोकित कर अगस्त्य मुनि जो कि देवताओं के साथ युद्ध देखने के लिए आये थे, श्री राम के पास आकर बोले - हे श्री राम !

आप रावण वध के लिए आदित्य ह्रदय का तीन बार पाठ करें। श्री राम ने आदित्य ह्रदय का तीन बार पाठ किया और रावण का वध किया। आज भी पूरे भारत वर्ष में एक दूसरे को सम्मानार्थ तथा सकारात्मक ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को राम-राम नाम से प्रणाम किया जाकर याद किया जाता है, उन स्वयं श्री राम ने आदित्य ह्रदय का पाठ रावण पर विजय पाने के लिये किया। हम मानवों को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ प्रति दिन करना चाहिए। विज्ञानं के विद्यार्थी के रूप में मैं अभिव्यक्त करना चाहूंगा कि सूर्य सर्वकालिक जीवित साक्षात देव हैं। सूर्य के कारण ही सम्पूर्ण वसुन्धरा पर जीव, जगत, पेड़, पौधे व प्रकृति का सुनहरा बसेरा और जीवन है। सूर्य की उर्जा के बिना इस स्वर्ग तुल्य वसुन्धरा का अस्तित्व ही नष्ट हो जायेगा। सूर्य ही जीवन व वसुन्धरा के अस्तित्व का पर्याय है।(क्रमश:)

-आलेख डॉ तेज प्रकाश व्यास
9407433970
प्रभु कुञ्ज ,135
सिल्वर हिल्स धार
research2047@
gmail.com

अंबाजी पद यात्रा का इतिहास

वडनगरा नागर समाज बांसवाड़ा

से चालता-चालता जाजो, अम्बे अम्बे माँ ना दर्शन करवा..... ! वडनगरा नागर समाज की कुलदेवी अम्बाजी (गुजरात) और भादरवी पूनम का मेला परस्पर पर्याय लगते हैं। भादरवी पूनम में भी 'पगपाड़ा' यानि पद यात्रा का अलग ही महत्व है। सभी धर्म एवं ज्ञाति के लोग पद यात्रा कर माँ के दर्शन कर कामना करते हैं अथवा कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

बांसवाड़ा के वडनगरा नागरों का अम्बाजी तक पद यात्रा का इतिहास काफी पुराना है करीब 1959 ई. में जब न तो पक्की सड़के थी, न ही सड़क पर आवागमन के साधन, ऐसे समय में भी अंबाजी की प्रथम पद यात्रा स्व.डॉ.शंकरलालजी त्रिवेदी, बसंतलालजी झा, चम्पालालजी दवे आदि के नेतृत्व में हुई। बैलगाड़ी में रोज के सामान की व्यवस्था एडवोकेट दुर्गाशंकरजी, देवीशंकरजी एवं सिद्धीशंकरजी आदि ने की थी। इसके बाद मई 1962 ई. एवं 1974 ई. में साईकिल यात्रा अंबाजी तक की गई थी।

कालांतर में पद यात्रा का कार्यक्रम में बांसवाड़ा मूल के डॉक्टर स्व.देवकीनंदनजी (नेत्र विशेषज्ञ) पाटन गुजरात में चिकित्सा सेवा देते थे उनकी प्रेरणा एवं नेतृत्व से वर्षों तक पाटन (गुजरात) से अम्बाजी तक बांसवाड़ा के वडनगरा नागर पद यात्राओं में भाग लेते रहे थे।

सन् 1991 ई. में पूनम मण्डल के तत्वावधान में वडनगरा नागर समाज बांसवाड़ा के युवकों ने प्रतिवर्ष पद यात्रा का संकल्प लिया जो 26 वर्षों से अनवरत् जारी.... है। श्री प्रकाश त्रिवेदी, हितेन्द्र झा, दिलीप दवे (अध्यक्ष वड.ना.स.), राकेश याज्ञिक, पीयुष झा, वरिष्ठ त्रिवेदी, रमानाथ झा, यतीश त्रिवेदी, संजय त्रिवेदी, हिमेश याज्ञिक, स्व.जगदीश त्रिवेदी बरसो तक अम्बाजी की ओर बढ़ते रहे हैं। अब तक लगभग 400 नागर ज्ञाति के सदस्य अम्बाजी के दर्शन व थाल का लाभ उठा चुके हैं। कुछ सदस्य तो 26 वर्ष से अनवरत् पद यात्रा में शामिल हो रहे हैं।

बांसवाड़ा से अंबाजी की करीब 300 किलोमीटर की यात्रा है जो 8वें दिन पूर्ण होती है। म्हाण में ध्वजा शब्दों से अंबाजी दूर छे... जावु जरुर छे। बोली माडी अम्बे... जय-जय अम्बे के उद्घोष पद यात्रियों में जोश भर देते हैं। बांसवाड़ा से बजवाना, भीलुडा, सागरवाड़ा, डूंगरपुर, शामालाजी, खेडब्रह्मा, आरासुरधाम, तक के सफर में एक गाड़ी के साथ में चलती है जो 10 दिन का राशन यात्रियों के सामान, बिस्तर की व्यवस्था रहती है। बांसवाड़ा मूल के डॉक्टर परेशजानी जी मोड़ासा (गुजरात) में निवासरत हैं, वे 26 वर्षों से श्यामालाजी में पदयात्री की ठहरने व भोजन व्यवस्था करते हैं।

अम्बाजी पहुँचकर वडनगरा नागर समाज के ज्ञातिजन स्वयं अपने हाथ से पवित्र पिताम्बर धारणकर माताजी थाल खीर हलवा, पूड़ी का भोग माताजी की चांदी की थाल में निज मंदिर में भोग अर्पण करते हैं। माताजी यह प्रसाद समाज में शांति, सुख, समृद्धि, वैभव और जिजीविषा प्रदान करता है। अंबाजी (आरासुरी धाम) की ओर नागर जाति के अनवरत् कदम चलते रहे दूरी इतनी लगती है जैसी बच्चे से माँ की गोद।

-डॉ.आशीष दवे (प्रवक्ता)
नयु लुक गर्ल्स कालेज बांसवाड़ा

रणथंभोर मेले में नागर समाज द्वारा भंडारा

सवाईं माधोपुर में रणथंभोर गणेशजी के मेले में नागर समाज की तरफ से भंडारे का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ एडवोकेट नवीन नागर एवं मुकेश नागर द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। हर साल की तरह इस साल भी मंच संचालन ऋषि नागर के द्वारा किया गया। जिन्होंने लोगों का बहुत मनोरंजन इस मंच से किया। इस भंडारे में नागर समाज के लोगों ने विशेष आयोजन किया, जिसमें नवीन नागर, विशाल नागर ने इस आयोजन में सहयोग दिया।

उत्साहपूर्वक मनाए गए श्रावण सोमवार

जयपुर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रावणी सोमवार बड़ी धूमधाम से हाटकेश्वर मंदिर ,बोर्डी के कुए स्थित हाटकेश्वर भवन में मनाया गया । प्रत्येक सोमवार को प्रात: से ही रुद्राभिषेक से भगवान हाटकेश्वर की पूजा अर्चना की गई , तथा शाम को आरती व भजन संध्या के कार्यक्रम के पश्चात दोना प्रसादी के साथ सभी भक्तों ने भगवान हाटकेश्वर का आशीर्वाद लिया । दिनांक 25/7/16, 1/8/16, 8/8/16, 15/8/16, 22/8/16व 29/816को किये गए रुद्राभिषेक के मुख्य आयोजक सर्व श्री जस्टिस विनोद शंकर दवे, श्री निरंजन नागर, श्री विनोद नागर, श्री सुधीर नागर, श्री भरत लाल नागर, श्री सुधीर ठाकोर, श्री शरद नागर, श्री महेंद्र कुमार नागर, श्री अजय महेंद्र कुमार नागर, श्री डा. योगेश चंद्र भट्ट, श्री कुमारेश बुच, श्री डा. वीरेन्द्र नानावटी, श्री गोरांग वासवाड़ा, एवं सुश्री पलक नंदी रहे ।

आरती करते हुए- निरंजन नागर व सुधा नागर, जस्टिस विनोद शंकर दवे।

श्री नागर पंचायती डेरा चेरिटेबल ट्रस्ट के चुनाव सम्पन्न

दिनांक 11/09/2016को श्री नागर पंचायती डेरा चेरिटेबल ट्रस्ट की प्रबंध कार्यकारिणी व रिक्त हुए ट्रस्टीज के पदों के चुनाव/चयन सम्पन्न हुए। सायं आहूत की गई साधारण सभा में नवनिर्वाचित ट्रस्टियों तथा पदाधिकारियों को चुनाव अधिकारी द्वारा पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई । श्री महेंद्र कुमार नागर प्रबन्ध ट्रस्टी ने अपने उद्‌बोधन में ट्रस्ट द्वारा समय समय पर किये गए कार्यों व नए पदाधिकारी को क्या कार्य करने हैं, पर सुझाव दिए । सभा में निम्न सदस्यों ने ट्रस्ट एवं हाटकेश्वर मंदिर के रखरखाव के लिए निम्न राशियों की घोषणा की-

श्री विनोद शंकर दवे- एक वर्ष तक हाटकेश्वर मंदिर में प्रात: पूजा अर्चना का खर्च वहन करना ।

श्री अरुण कुमार नागर- अपने पुत्र स्व. श्री अनुभव नागर की याद में जरुरत मंद बालक/ बालिकाओ के लिए रुपये 12000/-

श्री महेंद्र कुमार नागर- प्रबंध ट्रस्टी द्वारा भवन रखरखाव हेतु रुपये 5000/-

श्री सुरेंद्र कुमार दवे- रुपये 10000/-

श्रीमती उषा नागर- रुपये 7000/-

श्री ओमप्रकाश नागर- रुपये 5000/-

श्री राधेश्याम नागर- रुपये 11000/-

श्री सुनील कुमार नागर रुपये 7000/- (दिनांक 11/09/16को हुई सभा में सभी को भोजन प्रसादी हेतु)

सभा के अंत में श्री निरंजन नागर ट्रस्टी द्वारा उपस्थित सदस्यो का आभार व्यक्त किया तथा श्री विनोद प्रकाश नागर(पूर्व सचिव) द्वारा हाटकेश्वर भवन के 11 कोर्ट केस में किये गए प्रयत्नों तथा लगभग 300 से अधिक दिनों की पेशियों पर उपस्थित होने पर ट्रस्ट की ओर से हार्दिक धन्यवाद दिया। तत्पश्चात सभी ने हाटकेश्वर भगवान का आशीर्वाद व भोजन प्रसादी का आनंद लिया ।

वर्तमान ट्रस्ट मंडल के सदस्य- श्री महेंद्र कुमार नागर प्रबंध ट्रस्टी, श्री विनोद शंकर दवे, श्री निरंजन नागर, श्री सुधीर नागर(ठाकोर), श्री अरुण कुमार नागर, श्री राधे श्याम नागर, श्री ओम प्रकाश नागर

प्रकृति को नृत्य से रिझाने की कोशिश, चट्टान को मोम बनाने की कोशिश,
नभ को धरा से मिलाने की कोशिश, ऋतु परिवर्तन लाने की कोशिश।
मन की अभिव्यक्ति को दर्शाने की कोशिश, अभिव्यक्ति से परिवर्तन लाने की कोशिश,
सफलता की सीढ़ी पर जाने की कोशिश, सफलता के माने बदलने की कोशिश।

-धीरेन्द्र ठाकोर

ये कोशिश निरंतर यों चलती रहे
नभ का मिलन यों धरा से ही होता रहे
सफलता यों सब को ही मिलती रहे
सफलता के माने बदलते रहे।

इस चित्र पर आधारित-अभिव्यक्ति का प्रयास

इस अभिव्यक्ति को 'अहा! जिंदगी' हिन्दी की मासिक पत्रिका- दिसम्बर 2015 के अंक में सराहनीय अभिव्यक्ति में स्थान मिला है।

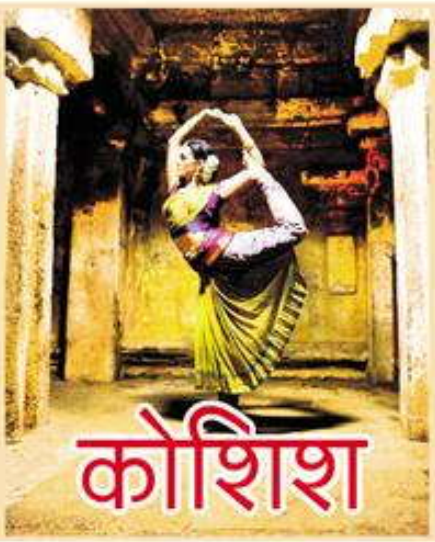

रतलाम में रास गरबा आयोजन

प्रतिभा सम्मान समारोह 16 अक्टूबर को

नागर महिला मण्डल द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी गरबा रास कर माँ की आराधना की जाएगी। 1 अक्टूबर को माताजी स्थापना के साथ आयोजन का शुभारंभ हुआ तथा प्रतिदिन 8 बजे से 10.30 बजे तक गरबे किये जा रहे हैं। यह आयोजन श्री जैन स्कूल प्रांगण काटजु नगर में चल रहा है। अध्यक्ष सुश्री मंगला दवे एवं सचिव अनुराधा दवे ने आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा रतलाम के तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी 'प्रतिभा-सम्मान-समारोह' रविवार दिनांक 16 अक्टुबर 2016 को दोपहर 4 बजे से सूरज हाल, वेदव्यास कालोनी, रतलाम पर आयोजित किया जा रहा है।

प्रतिभा सम्मान समारोह में एल.के.जी. से लेकर उच्च शिक्षा तक, खेलकूद में संभागीय, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ी, मेडिकल, इंजीनियरिंग या उच्च शिक्षा में सफलता या अन्य उपलब्धि हेतु पुरस्कृत किया जाएगा।

कार्यक्रम के दौरान इस वर्ष नवागंतुक, सेवानिवृत्त जन का भी सम्मान किया जाना है। इस हेतु श्री सुशील नागर को जानकारी प्रदान करें।

अंकसूचियों की छायाप्रतियां निम्न सदस्यों को जमा कराने का कष्ट करें-

(1) श्री विभाष मेहता - 9229597171 (2) श्री सुनील हेमकांत दवे - 9479785248, (3) श्री सुशील नागर - 9827535094, (4) श्री महेश रावल, नयागाँव - 9752490315, (5) श्री नवनीत मेहता - 9425329269, (6) श्री हेमन्त भट्ट - 9826677202

अंकसूची जमा करने की अंतिम दिनांक 5 अक्टूबर 2016 है। उक्त दिनांक के पश्चात् कोई भी अंकसूची स्वीकार नहीं की जाएगी। अंकसूची पर मोबाइल नं. लिखने का कष्ट करें।

सत्येन्द्र मेहता (सचिव), नवनीत मेहता (अध्यक्ष) एवं अन्य पदाधिकारीगण

पं.मुकेश नागर द्वारा श्रीमद् भागवत कथा वाचन

पं.मुकेश नागर सुपुत्र पं.श्री पुष्करजी नागर द्वारा दि. 17-9-2016 से दि. 23-9-2016 तक मनकामनेश्वर महादेव मंदिर, कस्तुरबा नगर रतलाम पर प्रतिदिन श्रीमद् भागवत कथा का वाचन किया गया जिसका क्षेत्रीय रहवासियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में नागर जनों ने कथा श्रवण कर धर्म लाभ लिया। दिनांक 23-9-2016 को कथा समाप्ति पर पूर्णाहुती, आरती व प्रसादी वितरण के पश्चात् चल समारोह के साथ शोभा यात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में बग्गी में भगवान श्री लड्डू गोपाल विराजमान थे तथा महिलाएँ सिर पर कलश धारण कर चल रही थी तथा कुछ महिलाएँ गरबा नृत्य करती हुई चल रही थी। शोभायात्रा में पं.मुकेश नागर के पिता व परिवार के अन्य समस्त सदस्य सपरिवार उपस्थित थे।

- सुशील नागर, हेमन्त भट्ट

अनुकरणीय पहल

स्व. कांतिलालजी भट्ट की स्मृति में भट्ट परिवार द्वारा लेण प्रथा के स्थान पर उनकी स्मृति में नागर समाज रतलाम को 5001/- देने की घोषणा की है। नागर समाज रतलाम उनके द्वारा किये गये कार्य की सराहना करता है। विदित हो कि श्री कांतिलाल जी भट्ट सा. का स्वर्गवास दिनांक 28-8-2016 को हो गया था। स्व.श्री भट्ट कमलेश एवं विश्लेष भट्ट के पिता है एवं कन्हैयालालजी भट्ट, श्री नारायण प्रसादजी भट्ट व श्री भगवतीलालजी भट्ट के भ्राता है।

-हेमन्त भट्ट

नई रिसर्च से पता चला है कि फरवरी के महीने में मिया-बीवी के बीच कम लड़ाई होती है, क्योंकि फरवरी में अन्य महिनों के मुकाबले कम दिन होते हैं।

मालवा के कश्मीर में धार्मिक आयोजन सम्पन्न

नरसिंहगढ़। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी 'मालवा का कश्मीर' कहीं जाने वाली नगरी 'नरसिंहगढ़' स्थित चार मण्डली श्रीहनुमान मंदिर में चमत्कारी बाल हनुमानजी की मूर्ति स्थापित है, जहाँ श्रीरामभक्त हनुमानजी की कृपा से पिछले 18 वर्षों से वहाँ स्थित हैण्ड पंप से साक्षात गंगाजी की अनवरत 'जलधारा' प्रवाहित हो रही है। चारों ओर प्राकृतिक वातावरण से हृदय आनंदित हो जाता है। श्री अरुण मेहता एवं श्रीमती उषा मेहता द्वारा प्रतिवर्ष इस स्थान पर भाद्रपद माह के मंगलवार के दिन श्री हनुमानजी का पूजन व हवन करके भव्य भंडारे प्रसादी का आयोजन किया जाता है। 13 सितम्बर मंगलवार को इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें व्यास-बन्धु पं.अजय नरेन्द्र व्यास एवं पं.आवेश व्यास द्वारा सुमधुर संगीतमय 'सुन्दरकाण्ड' पाठ सम्पन्न हुआ। श्री अरुण मेहता को सुपुत्र चि. डॉ.सत्यम मेहता ने सभी भक्तों का आभार प्रकट किया।

श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ में भक्तों ने लगाए गोते

ग्राम रंथभवर के गोपाल मंदिर में चल रही सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का वाचन पं. मुकेश पौराणिक द्वारा किया जा गया। कथा के प्रसंगों के आधार पर भक्तों को झांकी का आनन्द भी मिला। पं. पौराणिक द्वारा प्रस्तुत भजनों से भक्त श्रोता झूम उठे।

-संजय जोशी
उज्जैन

मध्यप्रदेश नागर परिषद शाखा उज्जैन के पदाधिकारियों की बैठक आगामी नवदुर्गोत्सव एवं अन्य कार्यक्रमों के सिलसिले में सम्पन्न हुई। चित्र उसी अवसर का।

राज्यस्तरीय प्रतिभा सम्मान हेतु अंकसूची 15 नवम्बर तक भेजे

म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति उज्जैन के तत्वावधान में दो दिवसीय राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन उज्जैन में किया जावेगा। 24 दिसम्बर 2016 को समिति के संस्थापक नागर रत्न स्व.श्री विष्णुप्रसादजी नागर की स्मृति में समिति की सांस्कृतिक इकाई अभिरुचि विकास मंच द्वारा सांस्कृतिक समारोह का आयोजन होगा जो श्रीमती ज्योति राजेश त्रिवेदी (टमटा) द्वारा उनकी माताजी स्व.श्रीमती इच्छा पत्नी श्री रमेशचन्द्र जी त्रिवेदी को समर्पित रहेगा।

25 दिसम्बर 2016 को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जावेगा। पुरस्कार हेतु उज्जैन नगर के नर्सरी से कक्षा 8वीं तक एवं सम्पूर्ण म.प्र. के कक्षा आठवीं से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण नागर ब्राह्मण छात्र-छात्राएं अपनी अंकसूची की फोटोकॉपी भेजें। क्रीड़ा, विज्ञान, कला इत्यादि क्षेत्र में राष्ट्रीय/राज्यस्तरीय विशिष्ट उपलब्धि पाने वाले छात्र-छात्राएँ भी अपने प्रमाण-पत्र की फोटोकॉपी भेजें।

अंकसूची/प्रमाणपत्र के साथ नाम, माता-पिता का नाम, पता व मोबाइल नं. आदि जानकारी संलग्न करें। समिति द्वारा वर्ष 2015 तक पांच बार पुरुस्कृत छात्र-छात्राएँ- 'आशा-विष्णु स्वर्ण पदक' हेतु वर्षवार पुरस्कारों की जानकारी सहित आवेदन पत्र प्रस्तुत करें। अंकसूची/प्रमाण-पत्र भेजने का अंतिम दिनांक 15 नवम्बर 2016 है। अंतिम दिनांक पश्चात् कोई भी प्रविष्टि मान्य नहीं होगी।

अंकसूची/प्रमाणपत्र निम्नांकित पते पर भेजें-

1. रमेश मेहता 'प्रतीक' 530, सेठीनगर उज्जैन 0734-2521228, 9425093702
2. अभिमन्यू त्रिवेदी 'गड़बड़ नागर' सत्यसुख 191 सेठी नगर, उज्जैन 9630111651
3. दिलीप त्रिवेदी 42, विवेकानन्द कॉलोनी, उज्जैन 0734-2555690
4. किरणकांत मेहता 37, सुभाषनगर, उज्जैन 9893189787
5. सन्तोष जोशी 474, एल.आई.जी.-2, इंदिरा नगर, उज्जैन 9425917541

माता-पिता स्व.सौ.नारायणी देवी स्व.श्री पं.दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी जागीरदार सा. भुतेश्वर

पुण्य स्मृति में 11000/- रु. श्री हाटकेश्वर धाम में भेंट हस्ते डॉ.पं.शिवेशचन्द्र त्रिवेदी 'शास्त्री' ज्योतिषाचार्य उज्जैन

श्री हाटकेश्वर धाम के पदाधिकारी सेमली पहुँचे

श्री हाटकेश्वरधाम न्यास मंडल के पदाधिकारी, सदस्य एवं युवा सेवा भावी सदस्य श्री हाटकेश्वर आश्रम सेमली गए थे, वहाँ सभी लोगों ने इष्टदेव श्री हाटकेश्वर भगवान का पूजन अर्चन कर पूज्य गुरुदेव से भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। पश्चात् श्रद्धेय प्रभुजी महाराज ने सभी को ससम्मान भोजन प्रसादी करवाई, न्यास मंडल द्वारा पूज्य गुरुदेव को नमन कर आभार प्रकट किया।

श्री गणेशजी की आरती में सम्मिलित हुए पं.मेहता

श्री हाटकेश्वर धाम में विघ्नहर्ता श्री गणेशजी की महाआरती में समाजजनों के साथ नागर समाज के गौरव जीवन प्रबंधन गुरु पं.विजयशंकरजी मेहता सपरिवार पधारे। आपने श्री गणेशजी का पूजन और आरती की साथ में युवा सक्रिय सदस्य श्री गोविन्द नागर के परिवार की भी पूजन आरती में सहभागिता रही। इस शुभअवसर पर पं.मेहता ने श्री हाटकेश्वरधाम न्यास को 11000/- रु. भेंट किए। न्यास मंडल ने धन्यवाद ज्ञापित करते डॉ.पं.मेहता का सम्मान किया।

नागर समाज का अन्नकूट महोत्सव 6 नवम्बर को

नागर ब्राह्मण्ड हाटकेश्वर मंदिर न्यास के तत्वावधान में एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के संयुक्त तत्वावधान में पांचवे वर्ष अन्नकूट महोत्सव का आयोजन आगामी 6 नवम्बर 2016 को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें अभिषेक पूजन व अन्नकूट दर्शन के साथ महाआरती व महाप्रसादी का आयोजन होगा।

कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए म.प्र. हाटकेश्वर देवालय हरसिद्धि पाल ट्रस्ट के अध्यक्ष सुरेन्द्र मेहता (सुमन), सचिव संतोष जोशी व अन्नकूट महोत्सव समिति के अतुल मेहता संयुक्त रूप से बताया कि समाज की एकजुटता के लिए इस प्रकार के आयोजन होना अत्यंत आवश्यक है इसीलिये प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी यह कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है, जिसमें समाज के आचार्यों द्वारा भगवान हाटकेश्वर देवालय हरसिद्धि और बंबाखाना पर भोग लगाया जाएगा।

आपने बताया कि कार्यक्रम कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी 6 नवम्बर 2016 रविवार को श्री हाटकेश्वर धाम, हरसिद्धिपाल पर आयोजित होगा, जहाँ सर्वप्रथम अभिषेक पूजन फिर अन्नकूट दर्शन महाआरती व महाप्रसादी का भव्य आयोजन कर सामूहिक भोज का आयोजन भी समिति द्वारा किया गया है। अन्नकूट महोत्सव के इस भव्यतम आयोजन को लेकर समाजजनों में भारी उत्साह है वृंदावनधाम उज्जैन निवासी विकास रावल जहाँ अन्नकूट में विशेष सहयोग करने वाले हैं वहीं स्व. श्री कैलाश नागर की स्मृति में उनके पुत्र अजय नागर के द्वारा अन्नकूट का दरबार सजाने के लिए सहयोग प्रदान करने की बात कही गई है।

कार्यक्रम में शामिल होकर इसे सफल बनाने की अपील नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर देवालय हरसिद्धि पाल, श्री हाटकेश्वर देवालय नागर ब्राह्मण सार्वजनिक न्यास बंबाखाना, म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा उज्जैन, म.प्र. नागर ब्राह्मण महिला परिषद् शाखा उज्जैन, म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद् शाखा उज्जैन, म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति उज्जैन, दैनिक अवंतिका, दैनिक चैतन्य लोक, जय हाटकेश वाणी, हाटकेश्वर समाचार व ब्रह्म समन्वय परिवार ने की है।

प्रसन्नता सबसे बड़ा रसायन है

विद्वान लोगों का कहना है कि प्रसन्नता सबसे बडा रसायन है। जो लोग प्रसन्न रहते हैं उनकी आयु लम्बी होती है हंसना और मुस्कराना दोनों क्रिया में काफी हद तक अंतर होता है। चेहरे पर मुस्कान आंतरिक हृदय में उत्पन्न अच्छे विचारों से आ सकती है या किसी ऐसे शख्स को देखकर आती है जो सीधे दिल के रिश्तों से आपसे जुडा हो। जबकि हंसना वो क्रिया है जिसे हिन्दी साहित्य की भाषा में कहे तो जब हास्य रस की उत्पत्ति होती है यानि किसी वस्तु या शख्स को देखकर आपके मन में उसकी विचित्रता को देखकर जो ख्याल आते हैं तो मुख पर हंसी का भाव उत्पन्न हो जाता है। हंसना ठीक है लेकिन कुछ लोग बात बात पर हंसने लग जाते हैं। यह भी विचित्र प्रकार है। विज्ञान की भाषा में देखा जाये तो किसी को हंसने के लिए नाईट्रिक आक्साईट गैस उत्पन्न कर वातावरण में छोड देने से व्यक्ति हंसता ही रहता है जब तक की उस गैस का असर रहता है। खैर इतना कुछ ज्यादा हो जाता है। पर सेहत और मन की हालत ठीक करने के लिए मुस्कान बडी ही कारगर क्रिया है। विदेशों में हुए रिसर्च से पता चलता है कि जो लोग आंतरिक रूप से हेल्थी रहना चाहते हैं वे हंसना मुस्कराना करते रहें, अगर अन्दर से प्रसन्न है तो मुस्कान और हसीन लगती है। यदि अंदर से प्रसन्नता की बजाय गुस्सा उत्पन्न होता और मुस्कान जबरदस्ती चहरे पर लाई जाए तो वह भाव कुछ ही लोग सहज तरीके से समझ पाते हैं। यहां एक सोचने वाली बात आती है कि गुस्से को पहले नियंत्रण में लाया जा सकता है हंसी पर नियंत्रण थोडा जटील होता है खासकर तब जब दो या अधिक लोग समूह में हंस रहे हो। गुस्से को चाहे कितने मौके दो लेकिन कभी इससे हटकर हंसी या मुस्कान को आपके दैनिक जीवन में एक मौका मिल जाए तो आप और आपके साथ रहने वाले लोगों और आपके आसपास के वातावरण में बहुत कुछ बदलाव लाए जा सकते हैं।

-कु.अर्चना प्रकाश मेहता
ग्राम पोस्ट देन्दला, जिला शाजापुर (मप्र)

> फूलों की सुगंध केवल वायु की दिशा में फैलती है, लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

महिला मंडल की बैठक श्री गणेशजी को समर्पित

नागर महिला मंडल की 8 सितम्बर की बैठक श्री गणेशजी को समर्पित रही। स्वागत एवं वंदना के पश्चात् सस्वर सामूहिक पाठ श्री गणेश अथर्वशीर्ष का किया गया, लगभग 30 महिलाओं ने सस्वर एक साथ पाठ किया। जिससे वातावरण में ऊर्जा का संचार हुआ।

21 प्रश्नों की प्रश्नावली श्री गणेशजी के सम्पूर्ण स्वरूप पर तैयार की थी, जिसका सभी ने उत्तर दिया और अपनी जिज्ञासा का समाधान किया। मोदक प्रतियोगिता में श्रीमती हर्षा ढोलकिया, श्रीमती दिप्ती जोशी, श्रीमती मृदुला त्रिवेदी, श्रीमती सुषमा मेहता, सुश्री अनिता पुराणिक, प्राची एवं स्वाति मंडलोई तथा अनुपमा ने पान मोदक, मोदकमाल, उकड़ी चे मोदक तथा विभिन्न प्रकार के मोदक का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती वामिनी भटनागर थी। उन्होंने बहुत सी शास्त्र सम्मत जानकारी दी, व भजन प्रस्तुत किया एवं पुरुस्कार वितरण किया व साधना, हर्षा बेन एवं अनिता के साथ सबने भजन का आनन्द लिया।

आरती के पश्चात् सबने एक दूसरे को शुभकामनाएँ दी। समापन के दौरान वरिष्ठ सदस्या व नागर परिषद की पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट श्रीमती सुमन एस.आर.जोशी एवं श्रीमती गीता देवी शर्मा (श्रीमती गायत्री मेहता की माताजी) को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं परिवारजनों को आघात सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की गई।

आगामी बैठक नवम्बर में- अक्टूबर माह में नवरात्रि एवं दशहरा, दीपावली होने से सभी सदस्यों का मेल-जोल बना रहेगा, अतः अगली बैठक नवम्बर माह में रखी जाएगी। सो सूचित हो।

जय हाटकेश सांस्कृतिक ग्रुप द्वारा गणेशोत्सव के दौरान खजराना मंदिर में भजनों की शानदार प्रस्तुति दी। चित्र उसी अवसर का।

इन्दौर के कंचनबाग में माँ आराधना

म.प्र. नागर परिषद शाखा इन्दौर एवं नागर महिला मंडल इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान में दस दिवसीय नवदुर्गोत्सव का आयोजन कंचन बाग में किया जा रहा है। घटस्थापना 1 अक्टूबर से की गई तथा प्रथम आरती रात्रि 9 बजे तथा द्वितीय आरती 10.45 बजे की जा रही है। महाआरती हवन 9 अक्टूबर को होगा। गरबा प्रस्तुति हेतु महिला वर्ग साड़ी, लहंगा चुनरी एवं पुरुष वर्ग को पायजामा, धोती कुर्ता पहनकर आना अनिवार्य है।

परिषद् अध्यक्ष जयेश झा एवं सचिव हिमांशु पुराणिक तथा नागर महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई एवं सचिव श्रीमती सोनिया मंडलोई ने अधिकाधिक समाजजनों से हिस्सा लेकर कार्यक्रम को सफलबनाने की अपील की है। कार्यक्रम के सहयोगी संस्थान हैं शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट, समस्त नागर विद्योत्तेजक ट्रस्ट जय हाटकेश वाणी हाटकेश्वर समाचार एवं जय हाटकेश सांस्कृतिक मंच।

तमिश रमेशजी दशोरा
5 अक्टूबर
शशिकला कमल त्रिवेदी
30 अक्टूबर
-प्रेषक- अभिलाषा अमित त्रिवेदी

कु. स्नेही (खुशी) मनोज तिवारी
महू - 2 अक्टूबर
सोम्या - अमित जोशी
इन्दौर - 15 अक्टूबर
वन्या (अवि-आशुतोष जोशी)
25 अक्टूबर
जोशी-नागर-जाधव-तिवारी परिवार
-पी.आर.जोशी, इन्दौर

श्रीमती जैमिनी नागर
कोटा
25-10-2016
शुभाकांक्षी-
गोविन्द नागर एवं परिवार

सौ.गायत्री मेहता इन्दौर - 2 अक्टूबर
प्रदीप शर्मा, इन्दौर - 2 अक्टूबर
भैरवी मेहता, अहमदाबाद - 4 अक्टूबर
निशा झा, कोलकाता - 11 अक्टूबर
निधि दवे नासिक - 14 अक्टूबर
राजीव शर्मा नासिक - 15 अक्टूबर
वीना शर्मा, इन्दौर - 19 अक्टूबर
कौस्तुभ शर्मा, इन्दौर - 23 अक्टूबर
-गायत्री मेहता, इन्दौर

प्रणव व्यास
(सुपुत्र- प्रशान्त-सौ.दिव्या)
8 अक्टूबर
समस्त व्यास एवं
नागर परिवार, जयपुर

रामसिन के मोहित नागर का सम्मान

राजस्थान बोर्ड 10वीं परीक्षा में 97.33 प्रतिशत अंक लेकर जिले में प्रथम एवं राज्य में 10वीं रैंक आने पर जयपुर बिड़ला सभागार में शिक्षामंत्री वासुदेवनानी ने मोहित नागर एवं उसके माता-पिता का सम्मान किया। चित्र उसी अवसर का।

श्रीमती दिव्या नागर की प्राचार्य पद पर नियुक्ति

श्रीमती दिव्या शुभनाथ नागर पुणे को मुम्बई केम्ब्रिज हायर सैकण्डरी स्कूल का प्राचार्य नियुक्त किया गया है। श्रीमती नागर ने अपना कार्यभार 1 अगस्त 2016 को ग्रहण कर लिया है। आपकी नियुक्ति पर रतलाम से आर.एस. नागर एवं श्रीमती किरण नागर ने बधाई प्रेषित की है।

श्रीमती ज्योति मेहता को पी.एच.डी. की उपाधि

श्रीमती ज्योति पति सचिन मेहताको को डॉ.पूरनमल यादव के सानिध्य में मोहनलाल सुखाडिया युनिवर्सिटी उदयपुर द्वारा पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। इनके द्वारा समाज शास्त्र विषयान्तर्गत 'अनुसुचित जाति पर होने वाले अत्याचारों का समाज शास्त्रीय अध्ययन' पर शोध पर प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि श्रीमती ज्योति बांसवाड़ा के ओमप्रकाश-सुशीला नागर की पुत्री, श्रीमती किरण-शशिकांत मेहता की पुत्रवधु है।

-प्रेषक- नवनीत मेहता, हेमन्त भट्ट

श्रीमती किरण मेहता सेवानिवृत्त

46 वर्षों की स्वास्थ्य विभाग में स्टाफ नर्स के पद को गौरवान्वित कर श्रीमती किरण शशिकांत मेहता 31 अगस्त 2016 को सेवा निवृत्त हुई। नागर समाज ही नहीं रतलाम में अनेक लोगों का हमेशा मुस्करा कर स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर श्रेष्ठ नागर का धर्म निभाया। नागर समाज जन शासकीय चिकित्सालय जाकर सबसे पहले आदरणीय किरण भाभी को खोजते उन्हें अपनी पीढ़ा बताते, भाभी तत्काल डॉक्टरों को दिखाकर समाज के लोगों की सेवा बड़े उदार मन से करती और अनेक गरीब लोगों को अन्य मदद भी उपलब्ध करवाती। श्रीमती किरण मेहता का जन्म 9 अक्टूबर 1951 को खंडवा में श्रीमती सुषमा-कांतिलालजी मंडलोई के घर हुआ। 1 अक्टूबर 1972 से सेवा आरंभ कर खंडवा, रीवा सैलाना एवं रतलाम में सेवाएँ प्रदान की। श्रीमती नारायणी बाई (बबली बाई) एवं देवीप्रसादजी के पुत्र शशिकांत मेहता से विवाह हुआ। दो पुत्रों-बहुओं एवं पोते-पोती के साथ आनन्दपूर्वक जीवन यापन कर रही है। ईश्वर उन्हें समस्त सुख प्रदान करें।

-प्रेषक नवनीत मेहता, हेमन्त भट्ट

शिक्षक दिवस पर नगर पालिका परिषद द्वारा श्रीमती नागर का सम्मान

शिक्षा के क्षेत्र में उचित मार्ग दर्शन एवं शिक्षा देने वाले सेवानिवृत्त शिक्षकों व उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों के साथ मेधावी छात्रों का भी नगर पालिका परिषद के द्वारा गरिमामय कार्यक्रम आयोजित कर सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि श्री डॉ सागरमल जैन, कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय विधायक श्री अरूण भीमावद तथा विशेष अतिथि के रूप में प्रो. श्री मोहन सिंह तोनगरिया उपस्थित थे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अतिथियों ने गुरूओं को ज्ञान की पूँजी बताते हुए गुरूओं की महत्वता को स्वीकारते हुए अपने विद्यार्थी जीवन के अपने अपने अनुभव भी सुनाए अतिथियों ने कहा कि वर्तमान में शिक्षा का बहुत महत्व है तथा गुरूओ का ज्ञान एव मार्गदर्शन बहुत महत्वपूर्ण है इस सम्मान समारोह

कार्यक्रम में नगर पालिका परिषद के उपाध्यक्ष श्री मनोहर विश्वकर्मा, पूर्व विधायक श्री पुरूषोत्तम चन्द्रवंशी ,पूर्व नगर पालिका परिषद अध्यक्ष डॉ. बसन्त कुमार भट्ट, जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री रामवीर सिंह सिकरवार सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे

कार्यक्रम में पधारे सभी आगन्तुक महानुभवो का नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष श्रीमती शीतल भट्ट ने स्वागत करते हुए आभार माना ।

कु. रुचि नागर की विशेष उपलब्धि

श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर के न्यासी एवं प्रान्तीय कार्यकारिणी के संगठन मंत्री श्री राजेन्द्र नागर एवं महिला शाखा मन्दसौर की उपाध्यक्ष श्रीमती अलका नागर की प्रतिभाशाली सुपुत्री कु. रुचि नागर अपने बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा की धनी रही है। अपनी विद्यालयीन शिक्षा के दौरान सदैव प्रावीण्य सूची में आई। कु. रुचि ने इस वर्ष सत्र 2015-16 में इन्स्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलोजी (डीएवीवी) से स्नातकोत्तर डिग्री एम.ई. (डिजिटल इन्स्ट्रूमेंशन) में 89.6 प्रतिशत से अंतिम सेमेस्टर में सफलता प्राप्त कर उक्त सर्वोच्च टेक्निकल पी.जी. डिग्री 73 प्रतिशत से उत्तीर्ण कर परिवार समाज एवं नगर को गौरवान्वित किया है। कु. रुचि की इस असाधारण प्रतिभा एवं उपलब्धि पर नानाजी श्री शिवशंकर नागर प्रतापगढ़ श्री विजय एवं अजय नागर, डॉ.हेमन्त दुबे, पं.अजय व्यास तथा श्री रमेश नागर, श्री रवीन्द्र नागर, श्री राकेश नागर व श्रीमती वीणा पौराणिक सहित सभी परिवारजनों ने इनके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बधाई दी है।

-हेमन्त दुबे, शाजापुर

प्रतीक मेहता को मिला अमेरिका में कंप्यूटर साइंस में उच्च अध्ययन का अवसर

श्री स्वामीदयाल मेहता एवं श्रीमती ज्योति मेहता मुम्बई के सुपुत्र प्रतीक मेहता को उच्च अध्ययन के लिए अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ मेसाचुसेट्स (UMass), एमहर्स्ट, बोस्टन में प्रवेश मिल गया है। वे वहां 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस' में विशेषज्ञता के साथ कम्प्यूटर साइंस में एमएस करेंगे। प्रतीक ने मुंबई में विले पार्ले स्थित डी.जे. संघवी कॉलेज से कम्प्यूटर साइंस में बी.ई. करने के बाद आई.आई.टी. मुम्बई में एक वर्ष तक रिसर्च इंजीनियर के रूप में भी कार्य किया है। वे (स्व.) श्री सुखदयाल मेहता एवं श्रीमती निर्मल मेहता, मुम्बई के सुपौत्र तथा (स्व.) श्री रामवल्लभ नागर एवं श्रीमती मधुकांता नागर, उज्जैन के नाती हैं। चि. प्रतीक की इस उपलब्धि पर परिवारजनों, निकट सम्बन्धियों ने बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की हैं।

श्रीमती शक्ति नागर को सेवानिवृत्ति की बधाई

शक्ति नागर की सेवानिवृत्ति के उपलक्ष में 31 अगस्त 2016 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें परिवार के बड़े बुजुर्गों ने आशीर्वाद प्रदान किया। कुरुक्षेत्र से पधारे बेटी-दामाद ने भी आयोजन को शोभा प्रदान की।

-श्रीमती श्रद्धा नागर, कुरुक्षेत्र, (हरियाणा)

वैवाहिक (युवक)

कल्पित जनार्दनराय नागर
जन्मदि. 23-1-1988
11.45 पी.एम./ बांसवाड़ा
शिक्षा- बी.कॉम. डिप्लोमा इन इवैंट मैनेजमेन्ट
कार्यरत- नौकरी, अहमदाबाद (गुज.)
कद- 5'7", गौत्र- वत्सयाल
सम्पर्क- मो. 09414307094, 09461424366

शुभम चन्द्रशेखर नागर
जन्मदि. 24-10-1991
समय- शाम 7.46, उज्जैन
शिक्षा- बी.ई. सीएस
आय- 20,000 मासिक
सम्पर्क- उज्जैन मो. 9754582860

शशांक नवीन शंकर नागर
जन्मदि. 1-12-1981
12.35 ए.एम./कोलकाता
कद- 5'8"
शिक्षा- बी.कॉम.
कार्यरत- डिप्टी मैनेजर एचडीएफसी बैंक
सम्पर्क- शिवपुर हावड़ा
मो. 09433672267, 09830582158

अतुल मेहता
जन्मदि. 15-3-1984
समय- 5.25 पी.एम., अजमेर (राज.)
गौत्र- कश्यप, कद- 5'11"
शिक्षा- बी.कॉम. (ऑनर्स)
कार्यरत- मीडिया एंड पब्लिकेशन
सम्पर्क- 09352535962

पति रेडियो पर बिजी था।

पत्नी- आप क्या सुन रहे हो?

पति- मोदीजी के 'मन की बात'।

पत्नी- मेरी तो कभी नहीं सुनते हैं आप?

पति- तुम जो कहती हो उसे 'मन की बात' नहीं..., 'मन की भड़ास' कहते हैं...।

वैवाहिक (युवती)

कु. यामिनी चौबे
जन्मदि. 29-8-1988
गौत्र- धनंजय
शिक्षा- बी.कॉम. कम्प्यूटर
कद- 5'3"
कार्यरत- स्वयं की डांस एवं फिटनेस क्लास
सम्पर्क- इन्दौर मो. 9425346585

शिल्पा व्यास (मांगलिक)
प्रतापगढ़
जन्म स्थान- देवास (म.प्र.)
शिक्षा- एम.एस.सी.
कुंडली मिलान हेतु
सम्पर्क - 8452002454

चित्रा गोपाल कृष्ण दशोरा
जन्मदि. 1-11-1990
गौत्र- भारद्वाज भट्ट, कद-5'6"
शिक्षा- बी.टेक. कम्प्यू. साईंस
सम्पर्क- नाथद्वारा (राज.)
फोन 02953-233749, मो. 09414541196

वैशाली गोपाल मेहता
जन्मदि. 22-7-1987, समय- 2 पीएम उदयपुर (राज.) कद- 5'3"
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए, कार्यरत- गेस्ट फेकल्टी शासकीय कन्या महाविद्यालय, सोनकच्छ
सम्पर्क- सोनकच्छ जिला देवास
मो. 9826633134, 9993611481

आकांक्षा पंड्या
जन्मदि. 6-5-1988
11.10 ए.एम., गाजियाबाद
कद- 5'3", गौत्र- भारद्वाज
शिक्षा- बी.फार्मा, एम.बी.ए.
कार्यरत- ब्रांड मैनेजर डाबर, गाजियाबाद
सम्पर्क- मो. 9990735573, 8130586374

अलंकृता रूपराज नागर
जन्मदि. 23-9-1988 समय- 7.10/लखनऊ
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए. कम्प्यूटर कोर्स
कार्यरत- गुगल कंपनी, गुड़गाँव
सम्पर्क- भरतपुर (राज.) 07220865568

अपनापन

मुट्ठी बाँधे आये हैं,
खाली हाथ जायेंगे।
फिर भी जीवन में कुछ
कर गुजरने की चाह लिए हुए।
एक-दूसरे से धनवान बनने की
होड़ लिए हुए
कुछ गलतियाँ कर, स्वप्न को
साकार करने।
बढ़ चले हैं वीर, उनको आकार
देने। ये जानते हुए कि सब
धरा रह जायेगा।
फिर किसके लिए?
क्षत-विक्षप्त से हो रहे।
आत्मा की आवाज को क्यों,
सुन नहीं रहे।
सद्गुरु, सतचरित्र, सद्व्यवहार
ही केवल साथ जायेगा।
फिर मेरा-तेरा छोड़कर प्राणी
केवल अपनापन रह जायेगा,
अपनापन रह जायेगा।

स्वरचित- श्रीमती शक्ति रवीन्द्र नागर
नौलिया गली नागरवाड़ा, बांसवाड़ा

खेल बहु खेल्यो नागर वर...

खेल बहु खेल्यो नागर वर नटनी लीलामा,
मनमांकडाने वैराग्यना दोरडा पर कयारे नचावीश?
व्रत जप उपवास कीर्तन कर्या तारा नामना,
फर्यो चारेधाम कार्यो समागम संतोनो,
आंसु सार्या धणा कथा वार्ता सांभलता,
जंप रूदियाने गिरधर कयांय मल्यो नहीं।
तुलसीदल पंचामृत नु छे तने वलगण
मारा व्यसनोनो अंत तु कयारे करीश?
अत्याचार धणा बध्या दुर्जनोना आ धरती पर,
अवतरीने गीतावचन तु पूरू क्यारे करीश?
दीधी धणाने सांत्वना तें खभे हाथ मूकीने,
हुं रडु छूं क्यारनो मने बाथमा क्यारे लईश?
राधा तो बैठी मूलाधारमा वाट जोती तारी,
रास रचावीश क्यारे तुं मारा सहस्त्रार मा भारी?
मोहिनी लागी तारी केटला सुरनर मुनिने,
धेलो थयो छुं हुं गांडो क्यारे करीश?

-विजयकुमार नागर 'नाकाम'
मुम्बई मो. 9987079846

भाई-बहन के रिश्ते को संभाले भाभी

ज्ञानवर्धक उपयोगी एवं विचारोत्तेजक सामग्री लिये सितम्बर 2016 का अंक मिलते ही एक बार में पूरा पढ़ लेने का लोभ संवरण नहीं हो सका। इतनी समृद्ध सामग्री उपलब्ध कराने हेतु आपको तथा सभी सह-कार्यकर्ताओं को अनेक बधाई-अभिनन्दन।

उत्कृष्ठ लेखन शैली तथा साहित्यिक भाषा में सम्पादकीय के लिये सामयिक विषय पर वर्तमान स्थिति का सटीक विश्लेषण तथा त्यौहारों, व्रतों को परम्परा से हटकर मनाने की स्थिति में भविष्य के लिये चेतावनी भी दे दी गई है।

अंग्रेज तो चल्या गया.... पर विरासत में संवेदनहीनता के बीज बो गया जो वृक्ष बनकर रिश्तों को विशेष कर 'रक्षा बंधन' के पवित्र अवसर पर भाई-बहिन के अटूट रिश्ते में दीमक की तरह लग गया है।

फाईल फोटो

'रक्षा बंधन' का पुनीत पर्व अनूठी भावना और संवेदनशीलता से ओतप्रोत है। दो पंक्तियां यहाँ लिखना उपयुक्त होगा 'ये दिन ये त्यौहार खुशी का पावन जैसे नीर नदी का, भाई के उजले माथे पर बहन लगाये मंगल टीका' तथा 'बहिना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है, प्यार के दो धांगों में संसार बांधा है' हृदय के ये उद्‌गार 'रक्षा-बंधन' पर्व का महत्व-रिश्तों में स्थान बताने के लिये पर्याप्त है। इस पर्व की गरिमा, उत्साह तथा इसे माना के रीति रिवाजों में किसी प्रकार की कमी हमें और नैतिक गिरावट की ओर ही ले जायगी।

महिलाओं और विशेषरूप से भाभियां इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। वे न केवल अपने अपने पतिदेवों को समझाये, जरूरत पड़ने पर दबाव भी डाले कि वे अपनी-अपनी बहिनों से पूर्ववत् रिश्तों में कमी न आने दें। भाभियां अधिक प्रभावशाली हो सकती हैं, इसके प्रमाण में सितम्बर 2016 अंक में आपके द्वारा ही प्रकाशित दो लाईने अंकित हैं-

'हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई
सबको सीधा करे लुगाई'
-अनिल मेहता, भावनगर (गुजरात)

अभिशाप बन गया है सोशल मीडिया

आधुनिक तकनीक वास्तव में वरदान है सूचनाओं के तुरन्त आदान-प्रदान का साधन है, सकारात्मक एवं ज्ञानवर्द्धक बातों का प्रसार माध्यम है, लेकिन उस समय बहुत अफसोस होता है जब सोशल मीडिया का उपयोग आपसी छिछालेदारी और बदले की भावना से किया जाने लगता है जहाँ तक हमारे नागर समाज का सवाल है, अनेक कुरीतियां एवं कमियां इसमें व्याप्त है। उनके विरुद्ध जनमत बनाने एवं समाजोत्थान में सोशल मीडिया का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। जो कुछ अच्छा हो रहा है, अनुकरणीय है, प्रेरणास्पद है उन बातों को अधिकाधिक फैलाव करें। आजकल तो समाचार पत्र भी नो निगेटिव न्यूज का ढोल पीट रहे हैं। ऐसी खबरों को वे छोटी सी जगह देते हैं जो निगेटिव होती है तथा उसके ऊपर लिख भी देते हैं निगेटिव न्यूज, उसके विपरित ऐसी खबरों को ज्यादा महत्व देते हैं, जो जिद करो, दुनिया बदलो का नजारा दिखाती है। नागर समाज को भी जिद करो दुनिया बदलो की तर्ज पर सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए तथा यह भी देखना चाहिए कि उनकी भेजी गई सूचनाएँ वास्तव में किस मंच पर उठाई जानी चाहिए। कोई मासिक पत्रिका यदि डाक की गड़बड़ी से न मिले तो उस बारे में सूचना उसके कार्यालय में देना चाहिए या वाट्‌सअप पर प्रकाशकों की छिछालेदार करना चाहिए? क्या यही उचित पहल है, क्या यहीं समाधान मिलेगा? उसी प्रकार किसी संस्था के बारे में कोई विवाद है तो वह वाट्‌सअप पर उठाने से क्या फायदा है, संस्था की समिति की बैठक बुलवाकर वहाँ उसका हल निकालना चाहिए। समाज में कईं जगह सदुपयोग भी हो रहा है, कईं ग्रुप वाट्‌सअप फ्रेंड बनकर सांस्कृतिक एवं सामाजिक आयोजन कर रहे हैं, किसी को कोई जरूरत है तो वाट्‌सअप पर संदेश देकर धनसंग्रह किया जा रहा है। यह समाजोत्थान में सोशल मीडिया का उजला पक्ष है। समाज के मामले में सोशल मीडिया को नोगिनेटिव न्यूज एवं जिद करो दुनिया बदलो की नीति पर चलना चाहिए, तभी उसकी सार्थकता है।

-पवन शर्मा

एक बार मैं बीमार हुआ तो अस्पताल गया, वहाँ पर दो दरवाजे थे एक पर लिखा था मामूली बीमारी, दो पर लिखा था खास बीमारी। मुझे मामूली जुकाम था तो मैं पहले दरवाजे में चला गया। मगर वहाँ पर भी दो दरवाजे थे एक पर लिखा था आम आदमी दूसरे पर लिखा था खास आदमी। मैं ठहरा गरीब तो आम आदमी वाले दरवाजे में चला गया। पर ये क्या उस दरवाजे से निकलकर मैं अस्पताल के बाहर पहुँच गया।

यही है एक आम आदमी की जिंदगी जिसकी जेब में पैसा, ये दुनिया उसी को पहचानती है।

तुम्हारा एक कदम, उनके दो....

यह कितनी बड़ी विडंबना है कि मनुष्य को जिस मकसद से इस दुनिया में भेजा गया है, वह मकसद वह भूल चुका है, लाखों-करोड़ों लोगों में से एकाध व्यक्ति उस मकसद को समझता है तथा उस दिशा में आगे बढ़ता है लेकिन यह भी तय है कि कोई व्यक्ति जब एक कदम बढ़ाता है परमपिता दो कदम उसकी ओर बढ़ाते हैं।

श्रीमद् भगवत् गीता में भगवान ने बड़े स्पष्ट एवं समझने योग्य भाषा में सारी बातें लिखी है, हर तरह का वर्गीकरण किया है, गृहस्थ किस प्रकार भक्ति करे, सन्यासी क्या करे क्या न करें। किसी भी रूप में कोई व्यक्ति जब भक्ति मार्ग की तरफ बढ़ता है तो उसकी बाधाएँ भगवान खुद दूर करते हैं, मैं इस बात से कतई सहमत नहीं हूँ कि अच्छे लोगों को भगवान कष्ट देते हैं तथा पापियों का सहयोग करते हैं।

यह सब पूर्वार्द्ध का परिणाम है। पूर्व जन्म में क्या हुआ और अगले जन्म में क्या होगा इसकी चिंता छोड़कर वर्तमान में जो जीवन प्राप्त हुआ है उसकी चिंता करें, भगवान कहते हैं कि संसार में आए हो तो कर्म करना अनिवार्य है, जरूरी यह है कि उसका फल जब भगवान को समर्पित कर दिया जाता है तो यही कर्मयोग है। अपने सांसारिक कार्यों के साथ जो व्यक्ति भक्ति मार्ग की तरफ बढ़ने का प्रयास करते हैं तो भगवान स्वयं उनका सहयोग करते हैं, यह स्वप्रमाणित है दरअसल भोग मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है लेकिन वह भोग धर्म युक्त होना चाहिए, भगवान आपको खाने से मना नहीं करते, अपितु वह कहते हैं कि मुझे नेवैद्य लगाकर खाईये, कर्म कीजिये, परन्तु मुझे समर्पित कीजिए, आते-जाते खाते-पीते, कर्म करते उन्हें स्मरण करते रहना ही भक्ति है। जिन लोगों ने भगवान के बताए अनुसार जीवन जीया है तो वे जानते हैं कि ईश्वर भक्ति में रमे लोगों की भौतिक आवश्यकताएँ भी भगवान ही पूरी करते हैं, बात केवल विश्वास की है हमारे नागर गौरव संत

नरसीजी का ही उदाहरण लें तो समझ जाएंगे कि वे कृष्ण भक्ति में डूब गए थे, जब उनकी बेटी के विवाह की बात आई तो उनका मायरा स्वयं भगवान ने आकर भरा था ये मात्र किस्से कहानी नहीं है वास्तविकताएं है सत्य है। उसी प्रकार हम भी यदि भक्ति मार्ग पर बढ़ते हैं तो भगवान हमें पूर्ण सहयोग करते हैं।

कदम-कदम पर करते हैं और कर्म और भक्ति के साथ जो भोग प्राप्त होता है वही पूर्ण कहलाता है वही सार्थक होता है। इसलिए मनुष्य को अपने सभी कार्यों के साथ भक्ति भी करना चाहिए तथा धीरे-धीरे उस और पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ना चाहिए, जैसे कई धार्मिक स्थान है नाथद्वारा, शिर्डी, वैष्णोदेवी दरबार, अजमेर शरीफ आदि जहाँ के बारे में धारणा है कि वे जब तक नहीं बुलाते तब तक हम वहाँ नहीं जा सकते। लेकिन उसके लिए पहले हमें भावना तो बनानी पड़ती है, पहले हम सोचते हैं तब हमारे मन की पुकार वहाँ पहुँचती है, फिर वहाँ से बुलावा आता है, उसी प्रकार ईश्वर के लिए हमारे मन से पुकार उठे तब वे आते हैं और हमारे से ज्यादा उनकी भावना रहती है, क्योंकि बहुत करोड़ों-अरबों लोगों से गिने-चुने ही इस मार्ग पर बढ़ते हैं और परमानंद प्राप्त करते हैं।

इस विषय में अपने विचार 25 अक्टूबर तक हमें लिख भेजें। उन्हें आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

-सम्पादक

ये कैसे हैं रात-दिन

ये कैसे है रात-दिन?
छिन रहा पल-पल छिन-छिन।।
कोई किसी से, कभी न रुठे, प्यार के रिश्ते कितने अनूठे?
कोई किसी को दुख ना दे प्रश्न बनाये कोई न झूँठे?
यादों की कश्ती में बैठा हूँ, लौट के आये अच्छे दिन।।
ये कैसे हैं....?
ये कौन दिलों को तोड़ रहा, जीवन पथ मोड़ा
जानी अनजानी बातों में क्यूं इक दूजे को छोड़ रहा?
अच्छे रहो, अच्छे बनो, कट जाये चैन से जीवन
ये कैसे है....?
कितनी अद्भूत यह माया, खेल समझ न पाया
कभी फूलों में विश्राम किया, कभी काँटों ने बिछौना बिछाया
सुखों-दुखों की इस नगरी में, बीता योवन और बचपन।
ये कैसे हैं रात-दिन...?

-सुभाष नागर 'भारती'
सी/ओ नागर मेडीकल स्टोर अकलेरा फोन 07431-272310

विषय :- एहसान मानें... धन्यवाद दें...

सुख कभी सम्पन्नता का मोहताज नहीं होता

एक चीनी कहावत के अनुसार- 'वह व्यक्ति जो प्रश्न पूछता है पाँच मिनट के लिये मूर्ख माना जा सकता है। किन्तु वह व्यक्ति जो प्रश्न पूछता ही नहीं, हमेशा के लिये मूर्ख माना जाता है।'

यूँ तो सामान्यतः हम प्रश्न दूसरों से ही पूछते हैं, किन्तु कभी-कभी कुछ सार्थक प्रश्न हम अपने स्वयं से करें तो हम जीवन का भरपूर आनन्द ले सकते हैं।

आज मानव का जीवन कुछ अस्त-व्यस्त और आपाधापी-भरा होता जा रहा है। ऐसे में किसी व्यक्ति ने अपनी आँखें मूंद कर ईश्वर से कुछ प्रश्न पूछे जो इस प्रकार है-

'हे प्रभु! मुझे आपकी प्रार्थना करने का समय ही नहीं मिल पाता। जिन्दगी आपाधापी- पूर्ण हो गयी है।' ईश्वर ने कहा 'आपाधापी तुम्हे व्यस्त करती है तो क्या हुआ? तुम्हारे काम की उत्पादकता तो तुम्हें उससे मुक्त कर देती है।

इस पर उस व्यक्ति ने पूछा फिर भी जीवन इतना जटिल क्यों हो गया है? ईश्वर बोले जीवन का विश्लेषण करना छोड़ो और तुम इसे सिर्फ जीयो। नहीं तो ये और जटिल होने लगेगा।

व्यक्ति का उत्साह बढ़ता जा रहा है। उसने पूछा जिंदगी में अच्छे लोग भुगतते क्यों हैं? ईश्वर ने कहा क्या हीरा बिना घर्षण के चमक प्राप्त कर सकता है? अग्नि में तपाये बिना क्या सोना शुद्ध हो सकता है? अच्छे लोगों को मैं केवल परीक्षण में से गुजारता हूँ जिसके अनुभव से वे लोग बेहतर जीवन जीना सीख लेते हैं।

व्यक्ति ने आगे पूछा जीवन की अस्त-व्यस्तता के कारण कई बार हम समझ ही नहीं पाते हैं कि हम जा कहाँ रहे हैं? ईश्वर ने कहा 'यदि तुम बाहर की ओर देखोगे तो नहीं जान पाओगे कि तुम कहाँ जा रहे हो। अपने भीतर देखो। आँखें तो सिर्फ दृश्य दिखलाती है। परन्तु आत्मा सही रास्ता दिखलाती है।

व्यक्ति ने अगला प्रश्न किया 'कठिन समय में हम अपने आपको कैसे सम्भालें? ईश्वर ने कहा 'ऐसे समय में तुम केवल यह देखो कि तुम कहाँ तक पहुँचे हो, यह मत देखो कि तुम कितनी दूर आ गये हो और न ही यह कि तुम्हें जाना और कितनी दूर है? सदैव उपलब्धियों को देखो, अभावों को नहीं।

व्यक्ति का अगला प्रश्न था ऐसे में हम अपने जीवन को अच्छा कैसे बनावे? ईश्वर ने कहा अपने भूतकाल को बिना पश्चाताप को देखो। अपने वर्तमान का आत्म-विश्वास के साथ उपभोग करो और अपने भविष्य को पूर्ण निडर होकर बनाओ।

व्यक्ति का अन्तिम प्रश्न था कभी-कभी आप हमारी प्रार्थना अनसुनी कर देते हैं। क्यों?

ईश्वर ने कहा ऐसा कभी नहीं हुआ है। मुझमें पूर्ण श्रद्धा रखो और निडर होकर मुझसे प्रश्न पूछो। जीवन, सुलझाने के लिये एक रहस्य है न कि समाधान करने के लिये, यह कोई समस्या है। जीवन अद्भूत है यदि तुम यह जान सको कि उसे जीना कैसे है।

सन्तुष्टि हो जाने पर व्यक्ति ने अपनी बन्द आँखें खोली और कहा 'थैंक्यू गॉड'।

जीवन एक यात्रा है और इस यात्रा में जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं, हममें आध्यात्मिकता की भूख अपने अर्द्ध-चेतन मन में लगने और बढ़ने लगती है। जीवन में 'कुछ' पा लेने के बाद भी मन में एक छटपटाहट-सी बनी रहती है। इससे बचने के लिये हमें ईश्वर को अपनी प्रत्येक सांस के लिये- प्रत्येक पल के लिए, जो ईश्वर-प्रदत्त ही है, उसे धन्यवाद देना चाहिये।

बाईबल कहती है तुम इस दुनिया में कुछ भी लेकर नहीं आये। और यह भी निश्चित है कि तुम यहाँ से कुछ भी लेकर नहीं जा सकते। इसलिये जो, जितना कुछ भी तुम्हारे पास है, वह सब ईश्वर का ही दिया उपहार है। इस उपहार के लिये तुम्हें ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिये। सख हो या दुःख। दोनों ही परिस्थितियों में हमें ईश्वर का स्मरण करना चाहिये।

अब कुछ ध्यान और योग के बारे में...

प्रसिद्ध भारतीय राष्ट्रवादी चिन्तक व योगगुरु श्री अरविन्द के अनुसार- 'योग का अभ्यास हमें अपने स्वयं के अस्तित्व की असाधारण जटिलता के रुबरु ले जाता है। योग को पतंजली ने भी 'चित्त-वृत्ति निरोध' कहा है। योग के द्वारा हम अपने दोलायमान (ओसिलेटिंग) मस्तिष्क पर नियंत्रण कर सकते हैं। योग सूत्र (1.2) भी यही कहता है कि योग द्वारा हम अपने विचलित मस्तिष्क को स्थिर कर सकते हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता कहती है 'योग जीवन जीने का एक कौशल है।'

अमेरिका की वर्तमान प्रथम महिला मिशेल ओबाला कहती हैं कि योग के दावारा ही मैं अपनी स्थूल काया को लचीला (फ्लेक्जीबल) बना सकी हूँ।

ध्यान (मेडिटेशन) करने का प्राथमिक उद्देश्य है अपने मस्तिष्क को शान्त रखना जो कि विचारों का एक पुलिन्दा होता है। कभी-कभी मस्तिष्क ऋणात्मक विचारों में उलझा जाता है और उद्वेलित होने लगता है। जब मस्तिष्क ही फिट न हो तो शरीर कैसे फीट रह सकता है? इस हलचल को पुनः स्थिर और शान्त करने हेतु मस्तिष्क को थोड़े विश्राम की आवश्यकता होती है। ध्यान इसी मानसिक व्याधि की अचूक दवा है।

अतः एक सुखी व आनन्द से भरा जीवन जीने के लिये हर परिस्थिति में ईश्वर को याद कीजिये। उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कीजिये और ध्यान व योग-अभ्यास द्वारा अपना मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रखिये और यह भी याद रखिये कि सुख कभी सम्पन्नता का मोहताज नहीं होता।

-मोरेश्वर मंडलोई
खण्डवा

बोहरा (वो) समाज और हम

नाम और काम का अन्तर

बोहरा समाज और नागर समाज के बीच अनेक समानताएँ होने के बावजूद एक बहुत बड़ा अन्तर है। वे भी गुजरात से आए हैं तथा कालांतर में वे नागर ब्राह्मण ही थे। उन्होंने अपने धर्मगुरु के सानिध्य में न केवल संगठन बनाए रखा अपितु वे निरन्तर समृद्ध होते जा रहे हैं।

मैंने विगत अंकों में विभिन्न उदाहरण एवं विवरण देकर बताया है कि किस प्रकार बोहरा समाज और हमारे समाज के बीच गहरा अंतर है जो एक तरफ उन्नति, दूसरी तरफ अवनति परिलक्षित करता है।

(वो) वहाँ दान देने से लेकर समाज कल्याण का काम किए जाने तक किसी का नाम कहीं नहीं रहता, लाखों-करोड़ों रुपए का दान आता है, परन्तु नाम किसी का नहीं। कई व्यापारी ऐसे हैं, जो प्रतिमाह अपने हिस्से की दानराशि देने के बावजूद जरूरत पड़ने पर समाज कल्याण के कार्य हेतु सदैव मुक्तहस्त से सहयोग देने के लिए तत्पर रहते हैं। यह नहीं कि हमने अपना हिस्सा दे दिया तो पुनः आर्थिक सहयोग क्यों दें? कई व्यापारी तो प्रतिदिन सहयोग करते हैं, परन्तु अपना नाम कहीं आने नहीं देते। समाज में बकायदा विभिन्न समितियां बनी हुई हैं, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आदि सुविधाएं जुटाती है, जरूरत पड़ने पर इन समितियों को हजारों, लाखों रुपये मिल जाता है, किन्तु नाम कहीं नहीं। समाज के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य में जितनी भी आवश्यकता होती है उसकी पूर्ति ये समितियां ही करती हैं।

समाजजन का कितना भी महंगा इलाज हो ये समितियां तुरन्त व्यवस्था करती है। समिति के सभी सदस्य निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं तथा उसी निःस्वार्थ भाव से धन उनके पास आता है। न तो दान देने वाले, न उसे खर्च करने वाले न लाभ पाने वाले किसी का भी नाम कहीं नहीं आता, सब गोपनीय रहता है। यहाँ तक कि समाजसेवा एवं निर्माणों के नाम पर प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये खर्च होता है, पर दान देने वालों का नाम कहीं नहीं आता, न अखबारों या पत्रिकाओं में इन का जिक्र आता है। दरअसल हमारे शास्त्रों में लिखा है कि जब दान करो तो जिस हाथ से करो उसका दूसरे हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए। शास्त्र दान की महिमा से भरे पड़े हैं तथा यह भी शाश्वत सत्य है कि दान करके यदि उसका प्रचार कर दिया जाए तो उसका कोई महत्व नहीं रहता। दान करने की शास्त्र विहित पद्धति आज बोहरा समाज में प्रचलित है। वे नाम के बजाय काम पर ज्यादा ध्यान देते हैं। यही कारण है कि दान देने वाले तथा उसका लाभ पाने वाले समान रूप से लाभान्वित होते हैं।

(हम) हमारे समाज में काम का कम नाम का ज्यादा महत्व है, कहीं भी कुछ दान दिया तो उसकी घोषणा करना जरुरी है नाम छपना चाहिए। हर जगह शिलालेख, नाम पट्टिका। किसी का भला कर रहे हैं तो भी सबको मालूम पड़ना चाहिए। आजकल तो सोशल मीडिया का ऐसा चलन हुआ है कि किसी भी जरूरतमंद के बारे में खूब प्चरा किया जाता है फिर सब अपनी-अपनी घोषणा करते हैं पैसा बैंक खाते में जमा कर दो। मेरा ऐसा मानना है कि जो लाभ प्राप्त करने वाला या जरूरतमंद हो उसके नाम का कहीं प्रचार नहीं किया जाना चाहिये, भले ही देने वाले अपने नाम का खूब ढिंढोरा पिटे। जरूरतमंद का नाम गोपनीय रखकर उसके बारे में मदद एकत्र की जावे, यह उचित है ताकि मदद लेने वाले का आत्मसम्मान बना रह सके।

यहाँ तो कोई कुछ भी करे उसको नाम की ज्यादा चिंता है, इसी वजह से समाज उन्नति नहीं कर पा रहा है, समाजजन देते कम है हिसाब ज्यादा पूछते हैं, विश्वास नाम की चीज कहीं नहीं होती। कहीं-कहीं तो दान की घोषणा कर दी जाती है, और नाम भी छपवा लिए जाते हैं तथा पैसा देने में आनाकानी की जाती है। यह दान का कैसा रूप है। एक तो हमारे समाज में वैसे ही नौकरी पेशा लोग ज्यादा होने से बड़े दानदाता कम ही है और जितने हैं वे देने के बाद नाम कमाना चाहते हैं। इस बारे में हमें बोहरा समाज से प्रेरणा लेना चाहिए। समाज का खूब भला करें, खूब दान करें लेकिन उसका प्रचार कतई न करें।

-दीपक शर्मा

संसार सागर से नैया पार लगाने की कला

मनुष्य जन्म भगवान ने इसलिए दया करके दिया है कि हम अपना कल्याण कर सके, स्त्री, शरीर, संतान सब कुछ असत्य है फिर भी उनके मोह में वह ऐसा पागल बन गया है कि उसे समय और लक्ष्य का भी भान नहीं रहता पर क्या किया जाय, क्योंकि मानव एक सांसारिक प्राणी है और उसे संसार में रहकर ही उसे अपना पिता, पुत्र, पति का कर्त्तव्य निभाना है पर इस दुनिया में आने से पहले भगवान ने भी कुछ प्रतिज्ञा कर्तव्य सिखाये थे जो उसे पूरा करना भी हमारा धर्म है पर संसार में रहकर और ग्रहस्थ में रहकर कैसे अपनी नया पार लगाई जाये।

भगवान ने प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों के हिसाब-किताब के मुताबिक सुख-दुख दोनों दिए हैं। सुख-दुख में कैसे रहना यह भी सिखाता है भगवान ने खुद राम अवतार लेकर हमें बताया है कि दुख आने पर कैसे रहे? फिर भी मनुष्य क्यों नहीं समझता, क्यों अपने आप को अंधेरे में जाने से रोक नहीं पाता, क्यों किसी को कष्ट देता है, क्यों किसी का अच्छा नहीं देख पाता जो भाग्य में लिखा है उसे कोई नहीं बदल सकता और उसे भोगे बिना छुटकारा भी नहीं मिल सकता। बस इतनी सी बात मनुष्य समझ जाय तो उसका बेड़ा पार हो जाये।

उदाहरण के तौर पर पिछले कुछ समय एक ऐसे व्यक्ति पर नाबालिग लड़की के साथ कुछ गलत आरोप लगे जिसकी पिछले कितने ही वर्षों से आध्यात्मिक जगत में विशेष मान्यता रही है हजारो-लाखों की संख्या में उनके शिष्य भी रहे यह आरोप सत्य है या असत्य इसका निर्णय तो न्याय पालिका करेगी, परन्तु इस प्रकार की घटना संत महात्माओं को अपमानित और कलंकित करती है। सत्संग एवं संत महात्माओं में आस्था स्वाभाविक रूप से सशंकित होती है कहते हैं कि कहीं आग लग जाये तो उसे पानी से बुझाया जा सकता है, परन्तु यदि

पानी में ही आग लग जाये तो उसे कैसे बुझाया जाये।

सत्संग एवं आध्यात्मिक उपदेश से संसार के बुरे कर्म रोकने की प्रेरणा दी जाती है, किन्तु संत्सग करने वाले एवं उपदेश देने वाले संत पर ही इस प्रकार का आरोप लगते हैं तो किससे आशा की जाय। यह उदाहरण मैं आपको इसलिए बता रही हूँ कि आप सब भी इस तरह की बातें सोचकर अपने आत्मोद्धार के लिए प्रयास में पीछे न रह जाएं। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को पता होता है कि कौनसा कर्म सही या गलत, परन्तु भाग्यवश या पिछले-जन्म की कुछ लेनदारी वश, वो गलत कर्म भी कर बैठता है और दुख उठाता है, परन्तु कोई बात नहीं भगवान बड़े दयालू है अपनी आँखें खुलने पर हमें तुरन्त बुराई छोड़कर सत्मार्ग पर चलना चाहिए, वाल्मीकीजी भी पहले पापकर्म करते थे पर नारद जी ने उनकी आँखे खुलवा दी और तुरंत ही उन्होंने पापकर्म छोड़कर अपने जीवन को सत्मार्ग पर चलाया और एक महान व्यक्ति बने। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के कर्म में कुछ लिखा होता है जो रामजी ने तय कर रखा है 'होई सौ राम रचि राख्या' क्यों करि तर्क बढ़ई साजा' जो विधाता ने रच दिया वो तो होकर ही रहेगा जैसे संत के ऊपर ऐसे आरोप लगाया, सब तय होगा हमारे लिए भी सब कुछ तय है फिर काहे की चिंता, काहे की निराशा, काहे रूपये के लिए गलत रास्ता अपनायें और ना ही कुछ ऐसा कर्म करे जिससे आपके पास जीने की वजह ही ना रह जाये। समय बड़ा बलवान है समय पर ही सब काम बनते हैं, समय खराब होता हैं तो बसा बसाया घर भी तबाह हो जाने का कारण (Resion) चाहे जो कुछ भी रहा हो पर होता तो सब ऊपर वाले की मर्जी से कहते हैं ना पत्ता-पत्ता भगवान की मर्जी से हिलता है तो क्यों मनुष्य आपस में लड़ते-झगड़ते हैं? भाग्य में लिखा था जो हुआ उसे कैसे गुजरना, कैसे उबरना है यह सब भी समय करवा ही देगा।

शेष भगवत कृपा- 'बोझ कितना भी भारी क्यों न हो मनुष्य उसे रात तक तो उठा ही सकता है, हर कोई एक दिन तो काम कर ही सकता है, चाहे वह कितना ही मुश्किल क्यों न हो हर मनुष्य सूरज के डूबने तक तो खुशी, धैर्य, प्रेम शांति से जी सकता है जिन्दगी जीने का असली मतलब तो यही है।'

-श्रीमती निधि पुरुषार्थ पंड्या (नीतू)
सी-11/3, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2517824,
मो.09824016626

शक्ति आराधना का महत्व

चाञ्चल्या अरूण लोचना चित कृपा,चंद्रार्क चूणामणिं ।
चारूस्मेर मुखां चराचर जगत संरक्षणीं सत्यपदाम।।
चञ्चच्चम्पक नासिकाग्रविलसन मुक्तामणी रंजिता ।
श्री शैलस्थल वासिनीं भगवती श्रीमातरं भावये।।

अर्थात जो जगत माँ जिनके चञ्चल और अरूण वर्ण के नैत्रों से करूणा प्रगट हो रही हैं,चंद्रमा और सूर्य जिनके मस्तक के आभूषण हैं,जिनका मुख सुन्दर मुस्कान से शोभित हो रहा है जो चराचर जगत की रक्षिका है सत्य पुरुष जिनके विश्राम स्थान है,जिनके शोभायमान चम्पा के समान सुन्दर नासिका के अग्र भाग में मोती लरी जिनकी शोभा बडा रही है ऐसी शैल (हिमालय) पर निवास करने वाली भगवती माँ को मैं स्मरण करता हूं।

(यह सुन्दर मंगलाष्टक है जो मंगलाष्टक के रूप में गाया जा सकता हैं)

ऐसी करूणामयी माँ की उपासना से सभी अभिष्ठ कामनाएं पूर्ण होती है जो श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवती के इन नव दिवस पर पूजन अर्चना प्रार्थना के साथ मन को लगाता है वह इस पंच तत्व के शरीर से ही देवत्व को प्राप्त कर सकता हैं तो सांसारिक वस्तुओं की क्या बात है।

यदि विद्या,यश,लक्ष्मी और रूप (सौंदर्य),जय की कामना है तो इस श्लोक का जप करें इससे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का भी नाश हो जाता हैं।

विद्या वन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरू।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विशोजही

इसी प्रकार यदि अभिष्ट पत्नि की कामना हो तो निम्न श्लोक का जप करें

पत्नीं मनोरमा देहि मनोवृत्तानु सारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्।।

अर्थात है माँ मुझे ऐसी पत्नि दो जो मन के इच्छानुसार चलने वाली और सुन्दर हो और इतना ही नहीं वह दुर्गम संसार सागर से तारने वाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो ऐसी पत्नि मुझे प्रदान करो ।

अभिष्ट पति की कामना के लिए निम्न श्लोक का जाप करें-

हे माँ त्वं शिवार्धांगी यथा त्व शंकर प्रिया।
तथा माँ कुरु कल्याणी कान्त कान्त सुदुर्लभाम ।।

हे माता आप भगवान शिव की अर्धांगिनी हो और भगवान शिव को प्रिय हो ऐसे ही मेरा भी कल्याण करो और दुर्लभ सुन्दर पति प्रदान करो ।

इसी प्रकार रामचरित मानस में बाल कांड में माँ सीता ने भी पुष्पवाटिका के प्रसंग में माँ भवानी के मंदिर में जा कर माँ के चरणों में हाथ जोडकर वंदना की थी यह प्रसंग (बाल कांड के दोहा नं.२३४ के बाद तीसरी चौपाई से दोहा क्रमांक २३६ तक) नित्य पढ़ने से छह माह की अवधि में कन्या को सुयोग्य वर प्राप्त हो जाता है।

चौपाई

जय जय जय गिरिराज किशोरी,जय महेश मुख चंद्र चकोरी
जय गजवदन षडानन माता जगत जननी दामिनि दुतिगाता।
नहितव आदि मध्य अवसाना अमित प्रभाव वेद नहि जाना
भव भव विभव पराभव करणि विश्व विमोहिनि स्वरसविहारिनि ।

दोहा

प्रति देवता सुतीय महुं मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमितन सकहिं कहिं सहस सारदा शेष ।।
बालकांड दोहा न.२३५

चौपाई

सेवत तोहि सुलभ फल चारी,बरदायनी पुरारि पियारी।
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे सुर नर मुनि सब होहि सुखारे
मोर मनोरथ जानहू नीके वसहु सदा उर पुर सबही के ।
कीन्हेउँ प्रगट न कारण तेहीं,अस कहि चरण गहं वेदेहीं ।।
विनय प्रेम वस भई भवानी खसी माल मूरति मुसकानी ।
सादर सियं प्रसादु सिर धरेउ बोली गौरि हरषु हिय भरेउ।।
सुनु सिय सत्य अशीश हमारी पूजिहि मन कामना तुम्हारी।
नारद बचन सत्य सुनि साचा सो वर मिलहि जाहिं मनु राचा।।

छंद

मन जाहिं राचहु मिलिहि सोवरु सहज सुन्दर साँवरो।
करूणा निधान सुजान शीलु सनेह जानत रावरो
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली

दोहा

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ।।
बाल कांड दोहा २३६

पाठ करने से पूर्व रामचरित मानस भावार्थ समझ कर नित्य भाव सहित और श्रद्धा विश्वास से पूर्ण होकर पाठ करने से शत प्रतिशत कामना पूर्ण होती है।

रोग निवृत्ति के लिए निम्न मंत्र का जाप करें

रोगानाशेषा नपहंसि तुष्टा, रूष्टा तु कामान् सकलान भीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,त्वामाश्रिताया साश्रयतां प्रयन्ति।।

माँ भगवती के अष्टोत्तर शतनाम का जो नित्य पाठ करता है उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है वह धन,धान्य,पुत्र, सर्व वाहनों से युक्त हो चारों पुरषार्थ धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष को प्राप्त कर अंत में सनातन मुक्ति को भी प्राप्त कर लेता हैं।

इसी प्रकार एक कनकधारा स्त्रोत है जिसका विधिवत अनुष्ठान करने से शंकराचार्य जी ने स्वर्ण की वर्षा करवा दी थी यह पूर्ण सत्य है।

जय माता जी

-डॉ ओ.पी.नागर
श्री रामांक गोपालपुरा मक्सी रोड उज्जैन
मो. 9302222333

इन्द्रियनिग्रह

शास्त्रों में दस इन्द्रियां वर्णित है पांच ज्ञानेन्द्रियां एवं पांच कर्मेन्द्रियाँ।

ज्ञानेन्द्रियां है चक्षु, श्रोत्र,
घ्राण, रसना एवं त्वचा।
कर्मेन्द्रियां है वाक्, पाणि
पाद, पायु, उपस्थ।

दस इन्द्रियां एवं ग्यारहवां मन। मन को उभयात्मक मानते हैं। इसे ज्ञानेन्द्रियों में भी सम्मिलित किया जा सकता है और कर्मेन्द्रियों में भी।

उपनिषद में शिष्य आचार्य से जिज्ञासा करते हैं- आचार्य, सम्पूर्ण शान्ति के लिए इन्द्रियों का क्या महत्व है आचार्य कहते हैं इन्द्रियां महत्वपूर्ण है, इनके दमन की आवश्यकता नहीं है और नहीं कभी दमन किया जा सकता है। इनके निग्रह के द्वारा ही व्यक्ति अपने अभीष्ट तक पहुँच सकता है।

चक्षु का विषय दर्शन है, श्रोत्र का विषय श्रवण है। कभी भी आँख देखना बंद नहीं कर सकती और न ही कान सुनना बंद करेंगे। इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि आँख अच्छा देखे, कान अच्छा सुने। इस कार्य में निग्रह की ही आवश्यकता है। बिना निग्रह किये इन्द्रियों से कार्य लिया जाना ऐसा है जैसे बोझ ढोना। ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों का नियंत्रण मन के द्वारा होता है। मन ही इन दोनों का नियन्ता है।

श्रीमद्भगवत्गीता में अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से जिज्ञासा करते हैं-

चंचल हि मनः कृष्ण
प्रमाथि बलवद् दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये
वायोरिव सुदुष्करम् ।।

हे कृष्ण मेरा मन चंचल है इसका निग्रह वायु के समान अत्यंत कठिन है कृपया बताइए किस प्रकार मन का नियंत्रण किया जाए। श्री कृष्ण उत्तर देते हैं

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

हे महाबाहु! निःसन्देह चंचल मन का निग्रह अत्यंत कठिन है, परन्तु अभ्यास से तथा वैराग्य से मन का निग्रह हो सकता है। वेद में भी कहा गया है

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

मनः सूक्त के सात मन्त्रों में मन के नियंत्रण की बात कही गई है। ऋषियों ने कहा है कि मन ही समस्त इन्द्रियों का राजा है। मन यदि स्थिर हो जाये तो सब कार्य सहज हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति में मन को एकाग्र करने और नियंत्रण की प्रक्रिया विभिन्न योगों के द्वारा बताई गई है।

आदि शंकराचार्य के अनुसार

मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः

मन सन्तुष्ट हो जाने पर कौन अमीर है कौन गरीब। मन का सन्तुष्ट होना ही सबसे बड़ी उपलब्धि मानी गई है।

सुभाषित में कहा गया है-

मनः एव मनुष्याणाम्
कारण बन्धमोक्षयोः
मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

महाभारत में उल्लेख है

शरीराद् जायते व्याधिर्मानसो
नात्र संशयः।
मानसाज्जायते वापि शारीर
इति निश्चयः।।

मन के अस्वस्थ होने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है।

दसों इन्द्रियों का कार्य मन के द्वारा ही नियंत्रित एवं संचालित होता है। मन जैसा चाहे इन्द्रियों को मोड़ सकता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं शरीर भी नहीं थकता मन थक जाता है बस मन को किसी और काम में लगा देने पर अथवा कार्य में परिवर्तन करने पर मन प्रसन्न हो जाता है और पुनः कार्य करने में समर्थ बना देता है। इसी को मनोरंजन कहते हैं। अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग कार्यों में आनन्द प्राप्त करते हैं वही मनोरंजन कहलाता है।

आँख, कान, नासिका, जिव्हा एवं त्वचा मन के अनुसार ही कार्य करती है। इनके कार्य कभी नहीं रुकते। परन्तु मन के अनुसार नियंत्रित हो जाते हैं। इसी प्रकार वाणी, पाणि, पाद, पायु एवं उपस्थ भी अपना कार्य करते रहें तभी जीवन यात्रा सुखद मानी जाती है। परन्तु जब-जब ये सीमा से आगे बढ़ जाते हैं अथवा कम रह जाते हैं। भाव यह है कि जब ये सब अनियंत्रित हो जाते हैं तभी व्यक्ति बन्धन में आ जाता है। इनके दमन की आवश्यकता नहीं है। अपितु निग्रह की आवश्यकता है। इसी प्रकार हाथ, पांव आदि में भी सामंजस्य आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में दमन अथवा मारने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। केवल नियंत्रण की बात कही गई है।

मनस्तु महदस्तुते।

अर्थात् मन जितना उदार होगा जीवन उतना ही सहज होगा। मानव के पास तन-मन-धन तीन वस्तु होती है। वेद में लिखा है-

धन कम हो, परन्तु इसे कौन मानेगा, भगवान करे सबके पास पर्याप्त धन हो। तन मध्यम हो - परन्तु इसमें भी लोग कहेंगे भगवान ने जैसा शरीर दिया है इसमें हम क्या कर सकते हैं?

धन और तन की बात छोड़ दीजिए।

मन उदार होना चाहिए। इसे तो हमें मान ही लेना चाहिए। मन छोटा रखने से ही व्यक्ति कष्ट प्राप्त करता है। मन बड़ा रखने का एक ही उपाय है, परिश्रम और प्रभु में पूर्ण आस्था।

इन्द्रिय निग्रह से ही धर्मवान अर्थात् कर्त्तव्यपरायण, निष्ठावान एवं सच्चे अर्थों में मानव बन सकते हैं।

ऋगवेद में कहा गया है

भद्रं नो अपि वातये मनः

भगवान! ऐसी प्रेरणा कीजिए जिससे हमारा मन कल्याण अथवा शुभ मार्ग का ही, अनुसरण करे।

-डॉ.रवीन्द्र नागर

प्रमुख रामकथाओं में श्री जानकीजी की अग्नि परीक्षा-3

अग्नि की साक्षी से श्रीराम ने सीता को निष्कलंक माना

ब्रह्माजी के शुभ वचनों को सुनकर मूर्तिमान अग्निदेव सीताजी को पिता की तरह गोद में लिये चिता से ऊपर उठे । अग्निदेव ने श्रीराम से कहा-श्रीराम! यह आपकी धर्मपत्नी विदेहराजकुमारी सीता है इसमें कोई पाप या दोष नही हैं यथा -

नैव वाचा न मनसा नैव बुद्धया न चक्षुंषा ।
सुवृता वृत्तशौटीर्यं न त्वामत्यचरच्छुभा ।।
श्री.वा.रा.युद्धकाण्ड सर्ग 118-6

उत्तम आचार वाली इस शुभलक्षणा सती ने मन ,वाणी, बुद्धि अथवा नेत्रों द्वारा भी आपके अतिरिक्त किसी दूसरे पुरूष का आश्रय नहीं लिया ।इसने सदा सदाचार परायण आपका ही आराधन किया है , अत: इसका भाव सर्वदा शुद्ध हैं । यह सीताजी सर्वथा निष्पाप है । आप इसे सादर स्वीकार करे मैं आपको आज्ञा देता हूँ । अब आप इससे कभी कोई कठोर बात न कहें । श्रीराम अग्निदेव की यह बात सुनकर प्रसन्न हुए तथा नेत्रों में आँसू आ गये। इसके पश्चात् श्रीराम ने अग्निदेव से कहा कि लोगों को सीताजी की पवित्रता का विश्वास दिलाने के लिये शुद्धिविषयक परीक्षा नितान्त आवश्यक थी क्योंकि सीता को दीर्घकाल तक रावण के यहाँ लंका में रहना पड़ा । मैं यदि परीक्षा न करता तो लोग यही कहते कि दशरथ पुत्र राम बड़ा कामी है। इसी कारण तीनों लोकों के प्राणियों के मन में विश्वास दिलाने के लिये एकमात्र सत्य का सहारा लेकर मैंने अग्नि में प्रवेश करती हुई सीता को रोकने का प्रयास नहीं किया । अत: आप सभी देवताओं के हितकर वचन का अवश्य पालन करना चाहिये । श्रीराम अपनी प्रिय सीता से मिले और बड़े सुख का अनुभव करने लगे क्योकि वे सुख भोगने के योग्य है।

वाल्मीकीय रामायणान्तर्गत मूल रामायण जिसमें 100 श्लोक वर्णित है जिसमें श्लोक 81-82 में श्रीराम द्वारा सीताजी को मर्मभेदी वचनों से कहा हैं -

रावण वध के उपरांत श्रीराम को सीता के मिलने पर बड़ी लज्जा हुई - ऐसा वाल्मीकीय रामायणान्तर्गत मूलरामायण (गीता प्रेस गोरखपुर) में वर्णित है ।

तेन गत्वा पुरीं लंका हत्वा रावणमाहवे ।
राम: सीतामनुप्राप्य परां व्रीडामुपागमत् ।।
तामुवाच ततो राम: परूषं जनसंसदि ।
अमृष्यमाणा सा सीता विवेश ज्वलनं सती ।।
वाल्मीकीय मूल रामायायण 81-82

उसी सेतु से लंकापुरी जाकर रावण को मारा । फिर सीता के मिलने पर राम को बड़ी लज्जा हुई तब भरी सभा में सीता के प्रति वे मर्मभेदी वचन कहने लगे। उनकी इस बात को साध्वी सीता सहन न कर सकी तथा अग्नि में प्रवेश कर गई ।इसके पश्चात् अग्नि के कहने से श्रीराम ने सीता को निष्कलंक माना। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के इस महान कर्म से देवता और ऋषियों सहित चराचर त्रिभुवन संतुष्ट हो गया। श्रीरामचरितमानस के लंकाकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी ने अत्यन्त संक्षिप्त में श्रीराम की लंका विजय का वर्णन किया है। श्रीराम ने सीताजी को हनुमान् के द्वारा रावण के वध तथा विभीषण को लंका का राजा के पद का दिया जाने का समाचार भेजा। सीताजी ने हनुमानजी् को श्रीराम दर्शन का कहा - श्रीराम ने तुरंत हनुमान, अंगद एवं विभीषण को सीताजी को लाने का कहा। सीताजी का राम के समक्ष आने का वर्णन श्री वाल्मीकीय रामायण सा ही है।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीराम के द्वारा सीता को अग्नि में सुरक्षित रख छोड़ने का संकेत सीताजी को राम के समक्ष आने के पहले कह दिया -

सीता प्रथम अनल मँहू राखी।
प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी।
श्रीराम.च.मा. लंकाकाण्ड: 107-7

सीताजी के असली स्वरूप को रावण के द्वारा सीताहरण के पहले ही अग्नि में रखा था। अब भीतर के साक्षी भगवान् उनको अग्नि में से प्रकट कर प्राप्त करना चाहते थे। इसके पूर्व में भी श्रीराम ने अरण्यकाण्ड में सीताजी की पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली सीता स्वयं ने ही निरूपित कर कहा -

चौ0- सुनहु प्रिया ब्रत रूचिर सुसीला ।
मैं कछु करबि ललित नरलीला ।
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा ।
जौ लगि करौ निसाचर नासा ।।
जबहिं राम सब कहा बखानी।
प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी।
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता ।
तैसइ सील रूप सुबिनीता ।।
श्रीराम च.मानस अरण्यकाण्ड: 23-1-2

लक्ष्मण जब कन्द-मूल-फल लेने के लिये गये तब अकेले में यह रहस्य पूर्ण वार्ता श्रीराम सीता के मध्य हुई । श्रीराम ने कहा हे प्रिये ! हे सुन्दर धर्म का पालन करने वाली सुशीले सुनो कुछ मनोहर मनुष्य लीला करूँगा । इसलिये जब तक मैं राक्षसों का नाश करूँ तब तक तुम अग्नि में निवास करो । श्रीराम की यह बात सुनकर सीताजी ने श्रीराम के चरणों को हृदय में धर कर अग्नि में समा गई । सीताजी ने अपनी ही छायामूर्ति वहाँ रख दी जो उनके जैसे ही शील स्वभाव और रूपवाली तथा वैसी ही विनम्र थी ।(क्रमश:)

-डॉ.नरेन्द्रकुमार मेहता
103ए व्यास नगर, ऋषिनगर विस्तार
उज्जैन (म.प्र.)

उस व्यक्ति को आलोचना करने का अधिकार है जो सहायता करने की भावना रखता है।

जन जन की भाषा-हिन्दी

हिन्दी भाषा की मिठास सुगंध से भरपूर है। विश्व की किसी भी भाषा इसके सामने गौण है आज भारत के अधिकांश प्रान्तों में हिन्दी भाषा को अपनाया जा रहा है। हिन्दुस्तान में रहकर हिन्दी को नहीं जानना बेईमानी है। सरकार के साथ हर एक भारतीय का कर्त्तव्य है कि हिन्दी को ऊँचाई के शिखर पर पहुँचाने का ठोस प्रयास करें।

कौन कहता है आसमाँ में सुराख हो नहीं सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों

वर्तमान में हिन्दी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। आज बातचीत के दौरान दो चार शब्द अंग्रेजी के कोई नहीं बोले तो उसे गँवार समझा जाता है घर के बाहर नाम भी व्यक्ति अंग्रेजी में लिखना पसंद करता है।

अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना फैशन हो गया है, हम मेहमानों से बच्चों का परिचय अभिवादन से नहीं बल्कि अंग्रेजी की कविता बच्चे को सुनाने हेतु कहकर अपनी बुद्धिमानी समझते हैं।

ये सच है कि अंग्रेजी का ज्ञान भी आवश्यक है, परन्तु जन-जन की भाषा हिन्दी को हमारे परिवार समाज और देश में पर्याप्त सम्मान और स्थान मिलना चाहिये।

आज भारत में सभी जाति धर्म के लोग हिन्दी बोलते हैं, हिन्दी समझते हैं, हिन्दी में सारा कामकाज करते हैं, हिन्दी कवियों के साथ मुसलमान कवियों ने हिन्दी में लिखकर हिन्दू-मुस्लिम एकता को आगे बढ़ाने में सकारात्मक पहल की इसमें खुसरो, रहीम, रसखान ने कृष्ण व राम भक्ति मार्ग पर चल नया अध्याय जोड़कर हिन्दुस्तान को एकता में जोड़ने की ठोस पहल की। इसके बाद प्रसाद, पंत, निराला, प्रेमचन्द ने हिन्दी को समृद्ध किया। कहने का आशय यह है कि हिन्दी ने हर क्षेत्र में पकड़ मजबूत की है। हिन्दी किसी की मोहताज नहीं है। सन् 1977 में अटल जी ने एक बार संयुक्त महासभा में हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित किया था।

भारत देश में बोली जाने वाली हिन्दी का आंकड़ा 75 प्रतिशत तक पहुँच गया है, जबकि 14 अन्य भाषाओं से हिन्दी का प्रतिशत अधिक है, विश्व के 70 देशों में हिन्दी बोली जाती है। अब हिन्दी हिन्दुस्तान से निकलकर विश्व तक अपने पाँव पसार चुकी है।

हर वर्ष सितम्बर माह में 14 तारीख को 1949 से हिन्दी को राज भाषा के रूप में स्वीकार किया और 2 वर्ष बाद 1951 से 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने का निर्णय हुआ।

तो आईये नये विश्वास और हौंसले के साथ हिन्दी मय होकर हिन्दी को अपनी मंजिल तक पहुँचाने हेतु सामूहिक प्रयास करें।

मंजिलें उन्हीं को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है,
पंख होने से कुछ नहीं होता
हौंसलो से उड़ान होती है।

-अशोक मेहता, रतलाम

प्रभू चरणों में मेरा भी प्रणाम लेता जा

तर्ज- जाने वाले सलाम लेता जा

परम श्रद्धेय आदरणीय भाई सा. श्री गोवर्धनलालजी नागर माचल वालों के चरणों में एक बहिन की ओर से अश्रु पूरित श्रद्धांजलि सादर समर्पित।

जाने वाले प्रणाम लेता जा-2, मेरा आखरी प्रणाम लेता,

जाते-जाते दुआएँ देता जा.. जाने...

(1) हम तो तुम बिन रह न पाएंगे, तुम्हारी याद में घुट-घुट के मर भी जायेंगे। जाने....

(2) तुम बिना दिन में नहीं चैन ना नींद रातों में-2 .... को तो तेरी बहुत याद ही सतायेगी। जाने ....

(3) तुम बिना सूने महल गलियां ओर ये चौबारे, सुने हुए बाग बगिया ओर ये चमन प्यारे जाने...

(4) झूठा जग छोड़ चले तुम तो तोड़ नाते भी, सच्ची प्रीत तुमने जोड़ ली प्रभु ओ प्यारे। जाने...

(5) तुमको देने के लिये पास मेरे कुछ भी नहीं, कहां से लाऊँ सुगंधी फूल प्यारे तेरे लिये मेरी इन आँखों के दो बिन्दु मुझसे लेता जा। जीने...

(6) जाके गऊ लोक में नागर का प्रणाम कह देना, अपने प्रभु को भी मेरी याद दिलाते रहना। प्रभु चरणों में मेरा भी प्रणाम लेता जा। जाने...

-सुमनलता नागर
मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर

शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया

डॉ.विजय कुमार पौराणिक
अवसान- 8 सितम्बर 2016

विगत 8 सितम्बर 2016 को नागर समाज के ग्राम चापड़ा निवासी डॉ.विजय कुमार पौराणिक का हार्ट अटैक होने से आकस्मिक अवसान हो गया। नागर समाज के प्रसिद्ध वैद्य स्व.श्री गोवर्द्धनलालजी पौराणिक करनावद निवासी के तीन पुत्रों में से श्री विजय कुमारजी का जन्म 1948 में करनावद में हुआ, स्नातक उपाधि इन्दौर से लेने के पश्चात् बी.ए.एम.एस., बी.एच.एम.एस. की शिक्षा देहली, लखनऊ से प्राप्त की। इनका विवाह नामली निवासी श्री गौरीशंकरजी नागर की पुत्री कलादेवी नागर से हुआ।

करनावद के प्रथम सरपंच के रूप में पिताजी के साथ करनावद के देवीजी मंदिर की पूजा एवं आसपास के 60 गाँवों की पूजा पाठ का काम इनके द्वारा कराया जाता था, साथ ही पिताजी के सानिध्य में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक इलाज भी इन्होंने सराहनीय रूप से किया। इन्होंने बागली तहसील में 26 जून 1969 को प्रथम अशासकीय विद्यालय की स्थापना श्री अम्बिका विद्या मंदिर के रूप में की। 1990 में एक समाज से विवाद के बाद पूरे परिवार को सब कुछ छोड़कर चापड़ा शिफ्ट होना पड़ा। यहाँ इन्होंने अपने जीवन की शुरुआत शून्य से की एवं कड़े संघर्ष के बाद उभरकर आज पौराणिक परिवार अपने आप को प्रतिष्ठित कर पाया तो इसमें उनकी एवं पूरे परिवार की लगन परिश्रम तथा कार्य के प्रति ईमानदारी का परिणाम है। धर्मपत्नी श्रीमती कलादेवी के 2004 में आकस्मिक देहावसान के पश्चात परिवार पर वज्राघात हुआ, किन्तु विजयजी, उनके दोनों पुत्र संजय एवं अजय तथा दोनों पुत्रवधुओं ने विकट परिस्थिति का सामना कर पूरे परिवार को संबल दिया।

डॉ.विजयजी का व्यक्तित्व ऐसा था कि जो एक बार उनसे मिल लेता, उनके विनम्र स्वभाव एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व का कायल हो जाता था। छोटे या बड़े सभी से वे इतनी विनम्रता एवं मधुरता से बात करते थे कि उन्हें भूलाना किसी के बस की बात नहीं और यही गुण उनके परिवार के सभी सदस्यों में भी विद्यमान है। पूरा परिवार धार्मिक गतिविधियों में संलग्न है। वर्तमान में वे अशासकीय शिक्षण संस्था के ब्लॉक अधिकारी के पद पर थे। अतः शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकेगा। समस्त नागर समाज एवं रावल परिवार रामबाग की ओर से अश्रुपुरित श्रद्धांजलि।

श्रीमती गीता शर्मा खण्डवा

खण्डवा नागर समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री गजानंद शर्मा की पत्नी श्रीमती गीता शर्मा का देहावसान बैंगलोर में हो गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं, परिवारजनों, रिश्तेदारों एवं समाजजनों में श्रद्धांजलि अर्पित की।

-गायत्री मेहता,
इन्दौर

स्व.श्रीमती कमला मासी बेरछा के चरणों में पुष्पांजलि

हमारी मासी

ममता भरी थी, हमारी मासी।
अपनों को अंतर में समेटे हुए थी,
हमारी मासी।
पूरे परिवार की अदम्य शक्ति के सम्मुख,
काल भी सहम गया था, जिनसे कई बार
ऐसी जीवट थी हमारी मासी।
क्या मायका क्या ससुराल
कभी नहीं भूला पायेंगे,
ऐसी थी हमारी मासी।

-मुकेश नागर
नीमवाड़ी, शाजापुर
मो. 94245-18080

अमरलाल पंड्या, मेरठ

मेरठ निवासी श्री अमरलाल पंड्या सुपुत्र स्व.नंदलाल पंड्या का देहावसान अल्प बीमारी के पश्चात् 11 मार्च 2016 को हो गया। आप सहायक आबकारी आयुक्त के पद पर मथुरा, अलीगढ़ मेरठ आदि स्थानों पर रहे। आपकी सेवानिवृत्ति 31-10-1996 को इसी पद पर हुई। आपकी दो पुत्रियां रोजी एवं रुबी है। श्रद्धांजलि।

श्रीमती रीता दवे, दिल्ली

रोहिणी दिल्ली निवासी श्रीमती रीता (धर्मपत्नी विनोद कुमार दवे) का आकस्मिक देहावसान 13-9-2016 को हो गया। श्रद्धांजलि।

श्रीमती संगीता नागर जयपुर

आदरणीय डॉ श्री पुरुषोत्तम नागर (पंड्या) की पुत्र वधु श्रीमती संगीता नागर पत्नी श्री अपूर्व नागर का दिनांक 24/09/2016को निधन हो गया। श्री नागर पंचायती डेरा चेरिटेबल ट्रस्ट श्री हाटकेश भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में जगह देवें और शोक संतप्त परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे। शांति! जय हाटकेश!

14वीं पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी श्रीमती स्वाति दीवान

बड़े शौक से सुन रहा था जमाना, तुम्हीं सो गए दास्ताँ कहते-कहते

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री किशोर भाई त्रिवेदी की पौत्री कु.स्वाति त्रिवेदी जो त्रिवेदी परिवार की आँखों का तारा थी और दीवान परिवार की रोशनी बन चुकी थी, का दुखद असामयिक निधन दि. 9 अक्टूबर 02 को हो गया। सर्वसंपन्न, बहुमुखी प्रतिभा की धनी सुसंस्कारित श्रीमती स्वाति अभिलाष दीवान की दि. 9-10-02 बुधवार को शुभम चिकित्सालय खण्डवा में डायरिया से हुई मृत्यु से खण्डवा नागर समाज व दीवान परिवार से नजदीकी रखने वाले सभी लोग स्तब्ध रह गये। यह हादसा सर्वत्र सन्नाटा कर गया।

श्रीमती दीवान उज्जैन के श्री दिलीप भाई किशोर भाई त्रिवेदी की द्वितीय कन्या थी। अपने माता-पिता से प्राप्त सद्‌गुणों से सम्पन्न आपने बी.कॉम. एवं गारमेंट टेक्नालॉजी में पत्रोपाधि प्राप्त की। खेलकूद में भी ये विश्वविद्यालय स्तर पर जुड़ो कराटे में अनेक बेल्ट प्राप्त ताईक्वांडो खिलाड़ी रही। आपका विवाह श्री चन्द्रभानु गजानन दीवान के ज्येष्ठ पुत्र चि. अभिलाष दीवान (खण्डवा) के साथ फरवरी 2001 को सम्पन्न हुआ था। वैवाहिक जीवन के 20 माह के अल्पकाल में आपने स्वतंत्र वातावरण पाया और अपनी प्रतिभा का परिचय नगर में व समाज में दिया।

अल्पकाल में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, खेलकूद, व्यापारिक सभी प्रकार की गतिविधियों में भाग लेकर खण्डवा नागर युवा समिति की उपाध्यक्ष के नाते युवाओं में नई जागृति पैदा की। गणेशोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर वे नागर सुन्दरी चुनी गई। नित्य देव दर्शन, पूजा पाठ, घर के कार्य निष्पादन कर इन सभी गतिविधियों में भाग लेकर अल्पायु में ही आपने अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली थी। जेसीस में भी श्री अभिलाष के साथ आपने अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया। हजारों में एक थी श्रीमती दीवान जो अपनी प्रतिभा की अमिट छाप छोड़कर हम से बिछुड़ गई। हम उनके आदर्शों पर चलकर युवा समिति इनके कार्यों को पूर्ण करें, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें व दीवान परिवार खण्डवा एवं त्रिवेदी परिवार उज्जैन को इस असहय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सौ.हर्षा-मनोज मिश्रा, चि. कनिष्क, सौ.तृप्ति पुनीत जोशी, चि. दिवीत

-द्वारा- दिलीप त्रिवेदी, उज्जैन मो. 9424541564, फोन 0734-2555690

वर्तमान परिवेश में चन्द गड़बड़ियाँ

(1)

रिश्तों, दिलों में, दरारे बढ़ रही, अनुभवी है खामोश।
अनकन्ट्रोल अपने वाले हो रहे, करता गड़बड़ जोश।।
करता गड़बड़ जोश, बढ़ती जाती है नादानी।
है डैडी-मम्मी लाचार, बाढ़ पर है जी मनमानी।।
पर, मादाएँ भरती जीवन में विष, उतर रहा है यारो पानी।
कह गड़बड़ कविराय, गान्धारी ममता, अन्धा मोह है जुम्मेदार।।
पेन्डलूम भई सन्ताने, हुए थाने, न्यायालय गुलज़ार।

(2)

अपनी कमाई का दंभ, मन पर सेल्फ नहीं कन्ट्रोल।
गुमान, भरी सेपरेट लाइफ हुई, रायता रहे हैं वे ढोल।।
रायता रहे हैं वे ढोल, पट्ठे-पट्ठी कल को भूल रहे हैं।
पैकेज, पद, अवैध संबन्ध से ये गुब्बारे से फूल रहे हैं।।
श्रवण-शक्ति घटी इनके कानों की, समझने सुनने को तैयार नहीं।
शशि, किरण, दिया बाती जैसा भ्रष्टकाल में प्यार नहीं।।

(3)

निजि मामले, इन्हें माने नहीं, समाज और परिवार।
होते माँजने छाछ, देते हेड लाइन, अखबार।।
देते हेड लाइन अखबार, टाइम पास टॉपिक यार बनाते।
अपणे कई करनो, पल्ले झाड़ अगुआ बहुत जंचाते।।
कह गड़बड़ कविराय, ये आए दिन खाली पीली शोर मचावे
कुरुक्षेत्र नव क्रियेट करे, अनगिन दिल दहलावे।

(4)

दम्पत्तियों में हो, आपसी समझ, न हो कोई कण्डिशन।
रेशमी एहसास जगे, होए म्यूचूअल यारों डेडीकेशन।
होए म्यूचूअल यारो डेडीकेशन, सरगम सी होए सबकी लाइफ
वरीज हरे, मस्ती भरे, लगे 'हेवन' जैसी वाइफ

(5)

सुखड़ो का आधार है, मनहर मन्जूला आचरण।
मनहर मन्जुल आचरण, जगे फिर-नूतन आशा।
समय शिला पर लिखी जाये दाम्पत्य जीवन की नव परिभाषा।
कह गड़बड़ कवि राय, वाक आउट कर जाय, जीवन पिच से क्लेश
अटूट रिलेशन यारों बने, रहे कृपावन्त हाटकेश।।

-गड़बड़ नागर, 191, सत्यसुख सेठी नगर, उज्जैन

श्रीमती कुसुम शेखर मेहता, लखनऊ

निशातगंज, लखनऊ निवासी श्रीमती कुसुम शेखर मेहता पत्नी श्री शेखर कैलाशनाथ मेहता का दिनांक 30 जुलाई 2016को लम्बी बीमारी के कारण निधन हो गया। आप बेहद मिलनसार, गृहकार्य दक्ष व मेहनती थी। आप तहरी (चावल का व्यंजन) बहुत ही लाजवाब बनाती थी। आपने अपने सास, ससुर की बहुत ज्यादा सेवा की, वो बेहद बेमिसाल है।

श्रीमती कुसुम दीक्षित, वाराणसी

गोलागली, सिद्धेश्वरी, वाराणसी निवासी गं स्व श्रीमती कुसुम (जया) दीक्षित पत्नी स्व श्री उत्तमराम हरिराम दीक्षित का हृदयगति रुक जाने से दिनांक 08 अगस्त 2016 को निधन हो गया। आप बेहद मिलनसार, गृहकार्य दक्ष व मेहनती होने के साथ काफी सरल स्वभाव वाली थी।

स्व.डॉ.चुन्नीलालजी शर्मा (निर्वाण दिवस 9 अक्टूबर 1980)

वे जादूगर चिकित्सक थे

अपनी कर्मभूमि में म.प्र. नागर परिषद् के अधिवेशन का आयोजन, नागरजनों का आगमन एवं उनके सत्कार का सुअवसर यह समाचार सुनकर डॉक्टर सा. प्रसन्नता से फूले नहीं समाते और उनका हँसमुख चेहरा और अधिक खिल जाता। किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि वह महामना हमारे मध्य इस भौतिक संसार में उपस्थित नहीं है और हम उनके मार्गदर्शन से वंचित रह गये हैं।

आपका जन्म जिला शाजापुर ग्राम बेरछा के पास ग्राम तिलावद में एक गरीब अध्यापक स्व.श्री सालिगरामजी के घर हुआ था। आपके सिर से पिता का साया आप जब 3 माह के थे तब से ही उठ गया था, लेकिन माता सुरजबाई एवं स्व.श्री मामाजी गणेशरामजी के लाड़-प्यार में आपका बचपन बीता। अतः आप मामा को ही पिता तुल्य समझते थे एवं मामा भी अपने पुत्र शंकरलाल से ज्यादा स्नेह शर्माजी को देते थे। आपकी केवल एक बहन जिसकी चेचक के कारण आँखे समाप्त हो गई थी। उसका विवाह कायथा ग्राम में हुआ था। आपकी पढ़ाई शाजापुर में सुवेचा मन्दिर में हुई। आप स्व.श्री राधेलालजी व्यास (भू.पू.एम.पी.) के अभिन्न साथी रहे थे। आपने बिजली के खम्बों के नीचे बैठकर अपनी शिक्षा पूर्ण की। फिर आपने 6 रुपये मासिक से अपनी नौकरी की शुरुआत साधारण चिकित्सक के रूप में की।

देश स्वतन्त्र होने पर आपने जिस जगह बेरछा में चिकित्सक की जगह कार्य किया, उसी अस्पताल को क्रय कर लिया और अपना स्वतन्त्र व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया।

आपका प्रथम विवाह अकोदिया ग्राम में हुआ था। लेकिन कुछ ही समय बाद आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। आपका दूसरा विवाह स्व.श्री वासुदेवजी नागर (नागर सैरी) शाजापुर के यहाँ हुआ। आपके तीन पुत्र व दो पुत्रियाँ हैं। प्रथम पुत्र चि. डॉ. मनोहरलाल शर्मा जो अभी बेरछा मण्डी में आपके स्थान पर ही कुशल चिकित्सक के रूप में कार्य कर रहे हैं। द्वितीय पुत्र चि. प्रकाशचन्द्र बेरछा मण्डी में ही कार्य करते थे एवं तृतीय पुत्र चि. विजयकुमार शर्मा उज्जैन में म.प्र. राज्य परिवहन निगम में चेकर के पद पर कार्यरत थे। आपकी बड़ी कन्या का विवाह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.श्री किशोरभाई त्रिवेदी के तृतीय पुत्र श्री दिलीपकुमार त्रिवेदी के साथ हुआ एवं द्वितीय कन्या का विवाह झोंकर निवासी श्री पं.वासुदेवजी शास्त्री के तृतीय पुत्र श्री हरीशचन्द्र शर्मा के साथ हुआ था।

उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यही रही है कि गरीब वर्ग को अधिक मदद करके आगे बढ़ाना। किसी व्यक्ति से कभी शत्रुता तो थी ही नहीं और अपने पूर्ण जीवन में ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिसके कारण किसी से मित्रता टूटे और शत्रुता हो जाये। इसी स्वभाव के कारण मरीजों को इतना अधिक विश्वास हो गया था कि मरीज कहते थे कि 'जब तक हमारा बॉ नी आवेगा तब तक हम नी जावांगा। वी खाली हाथ फेर दे हमारा ऊपर तो हम घर चल्या जावांगा। ये बातें अधिकतर वहाँ आये मरीजों के मुंह से सुनने को मिलती थी। आ. डॉ. के हाथों में क्या चमत्कार था, यह तो शायद वे खुद जानते या ईश्वर। परन्तु वहाँ आया मरीज कभी निराश नहीं गया। यह सत्य है।

उनके पूर्ण जीवनकाल से हमें वे केवल एक महत्वपूर्ण सन्देश दे गये हैं कि 'श्रम ही सफलता की कुंजी है। अतः हम सबका यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उनके बताये मार्ग पर चलें, कठोर परिश्रम करें व उनकी विशेषताओं को अपने जीवन में पूर्ण रूप से उतारें।

-सौ.शान्ता दिलीप त्रिवेदी
42, विवेकानन्द कॉलोनी, उज्जैन
मो. 9424541564,
फोन 0734-2555690

त्याग, संघर्षों की राह से परिवार को
पुष्पित, पल्लवित एवं संस्कारित करते रहे

स्व.श्री दुर्गाशंकरजी रावल
प्रभू शरण 9 अक्टूबर 2015

श्रद्धावनत
भगवतीलाल नागर, अरुणा नागर, गौरव नागर, अपर्णा नागर, सौरभ मेहता, गरिमा मेहता, काव्या, अक्षरा, ग्रंथ एवं समस्त बेटी परिवार
उदयपुर (राज.) मो. 09460190903

स्वर्णिम मध्यप्रदेश के स्वप्नदृष्टा पद्म भूषण पं.भगवंतरावजी मण्डलोई की स्मृति में

अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिता

का आयोजन खण्डवा में

दिनांक 12-13 नवम्बर 2016 को

सभी नागरजनों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र की टीम को खण्डवा क्रिकेट प्रतियोगिता में शामिल होने के लिये भेजें। संजीव मण्डलोई, दीपक जोशी, मनोज मण्डलोई, अभिलाष दीवान, योगेश मेहता

सम्पर्क – 9826387522

प्रथम पुण्य स्मरण

09 अक्टूबर 2016

स्व.श्री दुर्गाशंकरजी नागर

आज भी वो प्यार और दुलार याद आता है।
सुबह की पहली किरण से वह गीत याद आता है।
चाय की चुस्की के साथ वह हंसी-मजाक याद आता है।
कठिनाईयों में वह अतुल्य सहारा याद आता है।
परीक्षा की घड़ी में वो उन्नति करने का हौंसला याद आता है।
और कुछ हासिल करने पर गर्व का वह क्षण याद आता है।
दिनचर्या का वह अनुशासन याद आता है।
दादाजी... आज भी वो प्यार वो दुलार याद आता है।
शत् शत् नमन ...

-आशीष, पूर्णिमा, मौक्ष (मधुरम)
विनोद, नीता, कृष्णम, यशस्विनी नागर एवं समस्त परिवार।

पुण्यतिथि

स्व.पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1 अक्टूबर

श्रीमती कोमल सुरेन्द्र शर्मा
मुरलीधर-शारदा शर्मा
महेन्द्र कुमार-सुनीता शर्मा
विजय-कुसुम शर्मा
शर्मा परिवार, माकड़ोन
मो. 9926667488, 9424815705

पुण्य स्मरण

आपकी यादें हमें रुला रही है
आपके आदर्श हमें
दिशा दिखा रहे हैं
हर पल यह एहसास होता है
कि सदा आप हमें
आशीष दे रहे हैं..

स्व.श्री हरिवल्लभजी नागर

26 अक्टूबर

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

श्रद्धावनत :

श्रीमती श्यामादेवी नागर
पं.श्री कमलकिशोरजी, विमलशंकर,
डॉ.सुधीर, बलराम, पं. राजेश्वर,
सुनील, सुमीत, विनोद, पं. ब्रजेश,
सुशील एवं समस्त नागर परिवार
इन्दौर, मुम्बई, ग्राम सेमली,
ग्राम घुन्सी (जि.शाजापुर)

RYDAK

(RED)

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

षष्टम पुण्य स्मरण

आपके आदर्श ही हमारे लिए आशीर्वाद है
वैसे तो आज भी हमारे दिलों में बसे हो,
लेकिन याद तो फिर भी आते हो आप ।।

पूज्यनीय बाई

श्रीमती बसन्ती देवी

डॉ.हरिप्रसाद नागरजी नागर, अकलेरा

(पुत्री–दामाद)
सुमन–ओमप्रकाशजी
गिर्राज–परमानन्दजी
गायत्री–सुभाषजी
मीना–ब्रजभूषणजी नागर
हेमलता–अश्लेषजी नागर
मंजूलता–रविन्द्रजी व्यास
दीपा–अर्पितजी दीक्षित
स्वाति–अर्पणजी नागर
शालिनी–विवेकजी मेहता
संदीपा–अनुरागजी नागर
पारूल–गोपीनाथजी नागर

(पति) हरिप्रसाद नागर
(देवर) सुरेन्द्र–वृंदा नागर
(भतीजा) घनश्याम–उमा नागर

पौत्र एवं पौत्रवधु
ललित–रश्मि, चन्दन–मेघा,
मनीष–ज्योति, सिद्धार्थ–पूजा,
प्रशान्त, अमित, मंथन,
अक्षय, दिव्याक्ष, नन्दिनी,
वसुधा, साक्षी, आस्था,
चिन्मय, पुलकित, जिया

(पुत्र एवं पुत्रवधु)
गोपेश–प्रमिला नागर
सुभाष–सुमन नागर
सुधीर–हरिप्रिया नागर
महेन्द्र–राधिका नागर
राजकुमार–सीमा नागर
अरुण–सीमा नागर
प्रदीप–गरिमा नागर
कपिल–प्रीति नागर

सौजन्य से : राजमाता विजयाराजे बी.एड. कॉलेज, अकलेरा (राज.)

MPHIN/2007/19763 जय हाटकेश वाणी डाक पंजीयन RO/IDC/42/2016-18

चतुर्थ पुण्य स्मरण

आप हमसे दूर कभी गए ही नहीं,
हर पल, हर वक्त हमारे साथ ही हो,
हमारी प्रेरणा, हमारी आस, आप ही हमारा विश्वास हो,
जिसे कभी ना भूल पाएंगे, वो प्यारा अहसास हो...

पूज्यनीय माताजी

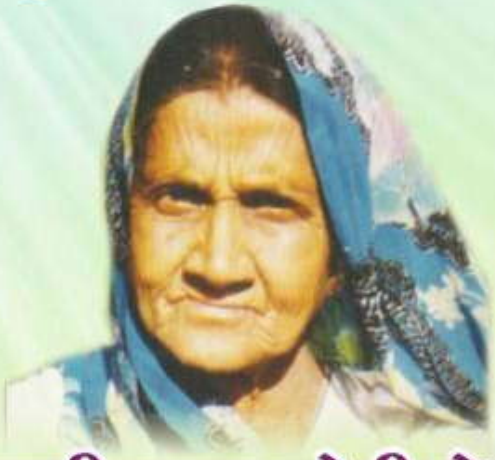

श्रीमती कमलादेवी मेहता

अवसान दि. 11 सितम्बर 2012

:: श्रद्धावनत ::

दिलीप कुमार–सौ.भाग्यश्री मेहता,
मूलचन्द–सौ.सुनीता मेहता,
नारायण–सौ.सरिता मेहता, अनंत–सौ. इन्दु मेहता,
दीपक–सौ.पुनम मेहता
अंकित, वैभव, आशुतोष, पल्लवी एवं माही
सौ.मीना–रितेश शर्मा, सौ.किरण–हरिओम व्यास,
आशी शर्मा, श्रीमन व्यास एवं समस्त परिवार पचोर 9425074367

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा शिवप्रभा प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 20–ए, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित।
सम्पादक : सौ.संगीता शर्मा (36) मो. 94250 63129
LATE POSTING